Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ
وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ
وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۝

(सूरत आले-इम्रान आयत :27)

अनुवाद: तू कह दे हे मेरे अल्लाह! सलतनत के मालिक! जू जिसे चाहे शासन प्रदान करे और जिस से चाहे छीन लेता है। और तू जिसे चाहे सम्मान प्रदान करता है और जिसे चाहे अपमानित कर देता है। भलाई तेरे ही हाथ में है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 4

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 16

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

12 शअबान 1440 हिजरी कमरी 18 शहादत 1397 हिजरी शमसी 18 अप्रैल 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

तक़्वा कोई छोटी चीज़ नहीं। इसके द्वारा उन समस्त शैतानों का मुक़ाबला करना होता है जो इन्सान की हर एक अंदरूनी ताक़त तथा शक्ति पर ग़लबा पाए हुए हैं। ये सारी क़ुव्वतें नफ़से अम्मारा की हालत में इन्सान के अंदर शैतान हैं अगर इस्लाह ना पाएँगी तो इन्सान को ग़ुलाम कर लेंगी। इलम तथा अक़्ल ही बुरे तौर पर इस्तिमाल हो कर शैतान हो जाते हैं। मुत्तक़ी का काम उनको और ऐसा ही और अन्य समस्त शक्तियों को बराबरी में करना है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

इन्फ़ाक़ मिन रिज़्क़िल्लाह

मुत्तक़ी की शान में وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ(अलबक़रा:4) आया है। यहां मुत्तक़ी के लिए مِمَّا मिम्मा का शब्द इस्तेमाल किया क्योंकि उस वक़्त वह एक अन्धे की हालत में है इसलिए जो कुछ ख़ुदा ने उस को दिया इस में से कुछ ख़ुदा के नाम का दिया। हक़ यह है कि अगर वह आँख रखता तो देख लेता कि इस का कुछ भी नहीं सब कुछ ख़ुदा तआला का ही है। यह एक पर्दा था जो इत्तिक़ा में लाज़मी है। इस हालत इत्तिक़ा के तक़ाज़े ने मुत्तक़ी से ख़ुदा के दिए में से कुछ दिलवाया। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत आयशा रज़ी अल्लाह अन्हा से वफ़ात के दिनों में पूछा कि घर में कुछ है। मालूम हुआ कि एक दीनार था। फ़रमाया कि यह अल्लाह से इत्तेहाद से दूर है कि एक चीज़ भी अपने पास रखी जाए। रसूल अक्रम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इत्तिक़ा के स्तर से गुज़र कर सलाहीयत तक पहुंच चुके थे इस लिए مِمَّا मिम्मा उनकी शान में ना आया , क्योंकि वह आदमी अंधा है जिसने कुछ अपने पास रखा और कुछ ख़ुदा को दिया लेकिन यह मुत्तकी के लिए लाज़मी था क्योंकि ख़ुदा की राह में देने से भी उसे नफ़्स के साथ जंग थी जिसका नतीजा यह था कि कुछ दिया और कुछ रखा। हाँ रसूले अक्रम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सब कुछ ख़ुदा की राह में दे दिया और अपने लिए कुछ ना रखा।

जैसे धर्म महोत्सव के निबन्ध में इन्सान की तीन अवस्थाओं का ज़िक्र किया गया है जो इन्सान पर आरम्भ से अन्त तक आती हैं इसी तरह यहां भी क़ुरआन करीम ने जो इन्सान को समस्त तरक़्क़ी के स्तर के तय कराने आया इत्तिक़ा से शुरू किया। यह एक बनावट का रास्ता है। यह एक ख़तरनाक मैदान है। इसके हाथ में तलवार है और मुक़ाबल में भी तलवार है। अगर बच गया तो नजात पा गया وَاِلَّا اَسْفَلَ السّٰفِلِيْنَ में पड़ गया। अत: यहां मुत्तक़ी की गुणों में यह नहीं फ़रमाया कि जो कुछ हम देते हैं उसे सब का सब ख़र्च कर देता है मुत्तक़ी में इतनी ईमानी ताक़त नहीं होती जो नबी की शान होती है कि वह हमारे पूर्ण हादी की तरह सम्पूर्ण ख़ुदा को दे दे। इसीलिए पहले थोड़ा सा टैक्स लगाया गया ताकि थोड़ा सा चख कर ज़्यादा क़ुरबानी के लिए तैयार हो जाए।

रिज़्क़ से मुराद

وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ(अलबक़रा:4) रिज़्क़ से मुराद सिर्फ माल नहीं बल्कि जो कुछ उनको दिया गया। इलम, हिक्मत, तबाबत। ये सब रिज़्क़ में ही शामिल है। इस को इसी में से ख़ुदा की राह में भी ख़र्च करना है।

तदरीज (क्रम) के साथ तालीम (शिक्षा) की तकमील(पूर्णता)

इन्सान ने इस राह में क्रम से और निरन्तरता से तरक़्क़ी करनी है। अगर इन्जील की तरह यह शिक्षा होती कि गाल पर थप्पड़ खा कर दूसरे थप्पड़ के लिए गाल आगे रख दिया जाए या सब कुछ दे दिया जाए तो इस का नतीजा यह होता कि मुसलमान भी ईसाईयों की तरह शिक्षा के असम्पूर्ण होने के कारण सवाब से वंचित रहते। लेकिन क़ुरआन शरीफ़ तो इन्सान फ़ित्रत के अनुसारा धीरे धीरे तरक़्क़ी कराता है। इंजील का उदाहरण तो उस लड़के का है जो स्कूल में दाख़िल होते ही बड़ी मुश्किल किताब पढ़ने के लिए मजबूर किया गया है। अल्लाह तआला हकीम है। उस की हिक्मत की यही मांग होनी चाहिए था कि तदरीज (क्रम) के साथ शिक्षा की पूर्णता हो।

इसके बाद मुत्तक़ी के लिए फ़रमाया:

وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ

(अलबक़रा:5) अर्थात वे मुत्तक़ी होते हैं जो पहली उतरी हुई किताबों पर और तुझ पर जो किताब नाज़िल हुई उस पर ईमान लाते और आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं। ये बात भी तकल्लुफ़ (बनावट) से ख़ाली नहीं। अभी तक ईमान एक पर्दा के रंग में है। मुत्तक़ी की आँखें मअरफत और बसीरत की नहीं। उसने तक़्वा से शैतान का मुक़ाबला कर के अभी तक एक बात को मान लिया है। यही हालत इस वक़्त हमारी जमाअत की है। उन्होंने भी तक़्वा से माना तो है पर अभी तक वे नहीं जानते कि यह जमाअत अल्लाह तआला के हाथों कहाँ तक उन्नति पाने वाली है। अत: यह एक ईमान है जो अन्त में लाभ देने वाला होगा।

यक़ीन का शब्द जब आम तौर पर इस्तेमाल हो तो इस से अभिप्राय उस का निम्नतर स्तर होता है अर्थात इल्म के तीन स्तरों में से निचले स्तर का इलम अर्थात इलमुल यक़ीन। इस स्तर पर इत्तिक़ा वाला होता है मगर इस के बाद ऐनुल-यक़ीन और हक़्क़ुल-यक़ीन का स्तर भी तक़्वा के स्तर तय करने के बाद हासिल कर लेता है।

तक़्वा कोई छोटी चीज़ नहीं। इसके द्वारा उन समस्त शैतानों का मुक़ाबला करना होता है जो इन्सान की हर एक अंदरूनी ताक़त तथा शक्ति पर ग़लबा पाए हुए हैं। यह सारी क़ुव्वतें नफ़से अम्मारा की हालत में इन्सान के अंदर शैतान हैं अगर इस्लाह ना पाएँगी तो इन्सान को ग़ुलाम कर लेंगी। इल्म तथा अक़्ल ही बुरे तौर पर इस्तेमाल हो कर शैतान हो जाते हैं। मुत्तक़ी का काम उनकी और ऐसा ही और अन्य समस्त शक्तियों को बराबरी में करना है।

सच्चा मज़हब इन्सानी शक्तियों का मुरब्बी होता है इसी तरह जो लोग इंतिक़ाम, ग़ज़ब या निकाह को हर अवस्था में बुरा मानते हैं वे भी क़ुदरत के नियम के मुख़ालिफ़ हैं और इन्सानी शक्तियों का मुक़ाबला करते हैं। सच्चा मज़हब वही है जो इन्सानी शक्तियों का मुरब्बी हो ना कि उन को नष्ट करे। रजूलीयत (मर्दानगी) या ग़ज़ब जो ख़ुदा तआला की तरफ़ से इन्सानी फ़ित्रत में रखे गए हैं उनको छोड़ना ख़ुदा का मुक़ाबला करना है जैसे दुनिया से विरक्त होना या सन्यासी बन जाना। ये सारे और बन्दों के अधिकारों को नष्ट करने वाले हैं अगर ये बात इसी तरह होती तो मानो

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क और सवीडन का सफर, सितम्बर 2018 ई (भाग-6)

मैंने हुज़ूर अनवर की तक़ारीर सुनी हैं, आपका पैग़ाम बहुत प्रभावकारी है और दुनिया के लिए ज़रूरी है।

हुज़ूर अनवर ने अपने सम्बोधन में जो पैग़ाम दिया है वह सारे यूरोप के लिए बढ़ा अहम है यह हर जगह पहुंचाना चाहिए।

आपके ख़लीफ़ा की शख़्सियत निहायत प्रभावित करने वाला है, वह साक्षात मुहब्बत हैं, उनको देखकर महसूस होता है कि मुहब्बत को जिस्म की शक्ल में देख रहा हूँ।

आपके ख़लीफ़ा साहिब की तक़ारीर का हर शब्द स्पष्ट, आमफहम और दिल पर असर करने वाला है, वह मुसलमानों और सारी दुनिया को मुहब्बत का दर्स देते हैं।

हुज़ूर अनवर के भाषणों को सुनकर बहुत आन्नद मिला क्योंकि ख़लीफ़ा की बातों की मिसाल नहीं मिलती और ये शिक्षा इस शिक्षा के बिलकुल मुख़ालिफ़ है जो मीडीया में आती हैं।

जमाअत अहमिदया बग़ैर किसी बदला के अपनी सारी ताकत अमन तथा शान्ति के लिए ख़र्च करती है, जमाअत का ख़लीफ़ा उस अमन तथा शान्ति का एक मिसाली नमूना है।

हुज़ूर अनवर की कुछ तक़ारीर का लिथोनैन भाषा में अनुवाद करने के बाद मैं यह कह सकती हूँ कि वह एक हिदायत की रोशनी हैं जो जितना चाहे उस नूर से फ़ायदा उठा सकता है

हुज़ूर से बात कर के मुझे महसूस हुआ है कि दिल की गहिराईयों से वह मुहब्बत करते हैं, इस्लाम की हक़ीक़त को मैंने पा लिया है और आज बैअत कर के जमाअत अहमिदया में दाख़िल होता हूँ

मैं आपकी जमाअत की प्रबन्धकीय सलाहीयत को देखकर हैरान हुए बग़ैर नहीं रह सका और यह चीज़ स्पष्ट इशारा दे रही है कि आप लोग दुनिया की ठीक रहनुमाई कर सकते हैं।

मुझे बहुत अच्छा लगा कि ख़लीफ़ा इन विषयों के बारे में बात करते हैं कि जो आज के दौर में प्रमुख हैं और उन्होंने इन मुश्किलों के हल वर्णन किए।

जब भी मैं इस्लाम के बारे में बात करती हूँ तो हमेशा जमाअत अहमिदया का बताती हूँ की क्यों मुझे सिर्फ अहमदियत में ज़िन्दा इस्लाम नज़र आता है।

जो अमन का पैग़ाम अपने ख़िताब में ख़लीफ़ा ने हमें दिया है यह पैग़ाम वक़्त की ज़रूरत है और इस पर अनुकरण करना बहुत ही ज़रूरी है।

जलसा सालाना जर्मनी 2018 ई में शामिल होने वाले मेहमानों की ईमान वर्धक प्रतिक्रियाएं

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

बदर हिन्दी 28 फरवरी 2019 ई में प्रकाशित रिपोर्ट का शेष

जलसा सालाना में शामिल होने वाले कुछ मेहमानों की प्रतिक्रियाएं

जलसा सालाना जर्मनी में शामिल होने वाले ग़ैर जमाअत दोस्त और कुछ नए अहमदी हुज़ूर अनवर के ख़िताबों और जलसा के प्रबन्ध और माहौल से ग़ैरमामूली प्रभावित हुए और अपने दिली भावनाओं का प्रकट किया। उनमें से कुछ मेहमानों की प्रतिक्रियाएं नीचे दर्ज हैं।

*दो जर्मन औरतों ने जिन्होंने अपना नाम ज़ाहिर नहीं किया। अपने प्रतिक्रियाओं का प्रकट करते हुए कहा कि हमें ख़ौफ़ था कि पहली बार मुसलमानों के इज्तिमा में शामिल हो रही हैं। हमें औरतों के जलसा गाह में जाने का भी संयोग हुआ। ख़लीफतुल मसीह की तक़रीर का कुछ हिस्सा सुनने का संयोग भी हुआ हम छोड़ा देर से पहुंचे थे। हमें औरतों का अलग पर्दा में रह कर अपनी कार्रवाई करना बहुत पसंद आया है। बहुत सारे लोग शायद उसे नकारात्मक नज़र से देखेंगे मगर हमें बहुत आज़ादी और इज़्ज़त का एहसास हुआ है जो कि मर्दों के साथ बैठने से नहीं होता। मैं इस्लाम को सिर्फ एक कट्टरता वाला मज़हब समझती थी मगर यहां आकर देखा कि यह सब बातें ग़लत हैं। ख़लीफतुल मसीह की तक़रीर में किसी किस्म की कट्टरता या बदले का पैग़ाम नहीं था बल्कि औरतों को उनकी ज़िम्मेदारियों की तरफ़ बड़े धीमे लहजे में ध्यान दिला रहे थे। मुझे अब अफ़सोस भी है कि मैं इस्लाम को एक जबर वाला मज़हब समझती थी। हम दोनों अगले साल फिर आएंगी । ख़लीफ़ा का ख़िताब भी सुनेंगी। हमें इस बात की बहुत ख़ुशी है कि हमें बतौर ईसाई जो इज़्ज़त और सम्मान दिया गया वह आम मुसलमानों से गुफ़्तगु करते हुए कभी नहीं मिला। अहमदियत ही इस्लाम की असल शक्ल मालूम होती है।

लिथुआनिया से आनेवाले मेहमान Mr. Jaronimas Laucius अपनी प्रतिक्रियाएं वर्णन करते हुए कहते हैं: में एक लेखक हूँ और मैं यहां इस्लाम के बारे में अपने इल्म में इज़ाफ़ा के लिए आया हूँ। ख़ुदा की तौहीद का दर्स जिस अंदाज़ में ख़लीफतुल मसीह ने दिया वह बहुत प्रभावित करने वाला है। उनके इस नुक्ता ने कि सिर्फ इबादत ना की जाए बल्कि ख़ुदा को ख़ुश करना मक़सूद होना चाहिए, मेरा दिल जीत लिया। मैं वापिस जाकर जमाअत के बारे में अख़बारों में कालम भी लिखूँगा और अपने मैगज़ीन की एक पूरी संख्या सिर्फ़ जमाअत के बारे में प्रकाशित करूँगा। मुझे इस बात का अंदाज़ा है कि ऐसा करने से मुझे विरोद्ध का सामना भी हो सकता है लेकिन मैं हक़ का साथ देना चाहता हूँ। मेरा दिल यहां आकर निहायत ख़ुश और सन्तुष्ट हुआ है मैं ख़लीफतुल मसीह के लिए और जमाअत के लिए बहुत नेक तमन्नाओं का प्रकट करता हूँ।

*Mr. Tomas Cepaitis ने अपने विचारों का प्रकट करते हुए कहा: मैं इस जलसा के माध्यम से पहली बार वास्तविक इस्लाम से वाक़िफ़ हुआ। यद्यपि में हमेशा से ही इस्लाम के पेशवाओं का सम्मान करता आया हूँ और मुसलमानों के साथ यूरोप में रखे जाने वाले व्यवहार को देखकर परेशान रहता था इस जलसा के माध्यम में एक नई दुनिया से परिचित हुआ हूँ जिस में दुनिया की मौजूदा समस्याओं का हल मौजूद है। मुझे लगता है कि मुझे अभी इस्लाम से बहुत कुछ सीखना है। मैं आपका बहुत शुक्रगुज़ार हूँ कि आपने मुझे वास्तविक इस्लाम से परिचय करवाया। ख़लीफ़ा साहिब से मुलाक़ात में उनकी सादगी और हुस्न कलाम से बहुत लुतफ़ अंदोज़ हुआ।

*एक मेहमान Mr. Arturas Mirkevic वर्णन करते हैं: इस जलसे ने इस्लाम को जानने के लिए बेहतरीन अवसर प्रदान किए हैं। इस्लाम के बारे में अध्ययन के लिए बहुत किताबें भी उपलब्ध हैं। मैं कुछ किताबें अपने साथ ले जाना चाहता हूँ जिनको पढ़ कर मैं इस्लाम के बारे में अपने इलम को और अधिक बढ़ाने

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

मैं तुम्हें ख़ुदा की जन्नत मिलेगी जो उस के सारे इनामों में से बड़ा इनाम है।

मैं अपने लिए सिर्फ इतना चाहता हूँ कि जिस तरह तुम अपने अज़ीज़ों और रिश्तेदारों की हिफ़ाज़त करते हो इसी तरह अगर ज़रूरत आए तो मेरे साथ भी मामला करो।

इताअत और इख़लास तथा वफ़ा की साक्षात मूर्ति आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बदरी सहाबी हज़रत साइब बिन उसमान , हज़रत ज़मुरह बिन अमुरो जुहनी, हज़रत सअद बिन सुहैल, हज़रत सअद बिन उबैद, हज़रत सहल बिन अतीक, हज़रत सुहैल बिन राफ़िअ,और हज़रत सअद बिन ख़ैसमहः रज़ी अलल्लाआ अन्हुम व रज़ू अन्हुम की मुबारका सीरत का दिल को छू जाने वाला वर्णन।

सहाबा की सीरत के आलोक में तारीख़ इस्लाम से बैअत उक़बा सानिया,

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मदीना हिजरत फ़रमाने के बाद मस्जिद नबवी की तामीर, हज़रत साद बिन ख़ीसमहः की शहादत और जंग जिसर इत्यादि के संक्षिप्त हालत का वर्णन

अल्लाह तआला प्रत्येक क्षण इन सहाबा के स्तर बुलंद फरमाता रहे।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 15 मार्च 2019 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

आज जिन सहाबा का मैं ज़िक्र करूँगा उनमें से पहला नाम है हज़रत साइब बिन उसमान रज़ी अल्लाह तआला अन्हो । उन का सम्बन्ध क़बीला बनू जुमह से था और आप हज़रत उसमान बिन मज़ऊन रज़ी अल्लाह तआला अन्हो के बेटे थे। आप की माता का नाम हज़रत ख़ौलह बिन्त हकीम था और इस्लाम के आरम्भ में ही, शुरू में ही आप मुसलमान हुए थे। हज़रत साइब बिन उसमान आपने पिता और चाचा हज़रत क़ुदामह के साथ हब्शा की तरफ़ दूसरी हिजरत में सम्मिलित थे। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीना हिजरत के बाद हज़रत साइब बिन असमान और हज़रत हारिस बिन सुराका रज़ि अन्सारी के मध्य भाईचारा क़ायम फ़रमाई थी। उनका ज़िक्र आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के तीर-अंदाज़ सहाबा में किया जाता है। हज़रत साइब बिन उसमान जंगे बदर, जंगे उहद, जंगे ख़ंदक़ और अन्य जंगों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल हुए।

(असदुल ग़ाबः जिल्द 2 पृष्ठ 396 से 397 प्रकाश दारुल कुतुब अल्इिलिमया बेरूत 2003 ई)(तबक़ातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 306 से 307 दारुल कुतब अल्इि-लिमया बेरूत 1990 ई)(अल्असाबा जिल्द 3 पृष्ठ 20 साइब बिन उसमान प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इिलिमया बेरूत 1995 ई)

जंगे बुवात में आं हज़रत सल्लल्लाहोअलैहि वसल्लम ने आपको मदीना का अमीर मुक़र्रर फ़रमाया था। जंगे बुवात जो 2 हिज्री में हुई है इस के बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने लिखा है कि रबी उल-अव्वल के आख़िरी दिनों या रबी उस्सानी के शुरू में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़ुरैश की तरफ़ से कोई ख़बर मिली जिस पर आप मुहाजरीन की एक जमाअत को साथ लेकर ख़ुद मदीना से निकले और अपने पीछे साइब बिन उसमान बिन मज़ऊन को मदीना का अमीर मुक़र्रर फ़रमाया। लेकिन क़ुरैश का पता नहीं चल सका और आप बुवात तक पहुंच कर वापस तशरीफ़ ले आए।

(उद्धिरत सीरत ख़ातमुन्निबय्यीन हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ 329)

मदीना से क़रीबन 48 मील की दूरी पर क़बीला जुहैन के पहाड़ का नाम है।

(सिब्बल अलहदा जिल्द 4 पृष्ठ 15 बाब फ़ी ग़ज़वा बुवात प्रकाश दारुल कुतुब अल्इिलिमया बेरूत 1993-ए-)

हज़रत साइब बिन उसमान जंग यमामा में शामिल थे। जंग यमामा हज़रत अबू-बकर रज़ी अल्लाह तआला अन्हो के ख़िलाफ़त के ज़माना में 12 हिज्री में हुई थी जिस में आप को एक तीर लगा जिसकी वजह से बाद में आप की वफ़ात हुई। आप की उम्र 30 साल से कुछ ऊपर थी।

(तबक़ातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 307 अलसाइब बिन उसमान बिन मज़ऊवन दारुलकुतब अल्इिलिमया बेरूत 1990 ई)

अगले सहाबी जिनका ज़िक्र है उनका नाम है हज़रत ज़मुरह बिन अमुरो जुहनी रज़ि। हज़रत ज़मुरह रज़ी अल्लाह तआला अन्हो के पिता का नाम अमुरो बिन अदी था और कुछ आप के पिता का नाम बिशुर भी वर्णन करते हैं। आप क़बीला बनू तरीफ के हलीफ़ थे जबकि कुछ के नज़दीक क़बीला बनू साअदा के हलीफ़ थे जो कि हज़रत सअद बिन उबादह का क़बीला था। हलीफ़ अर्थात उनका आपस में एक मुआहिदा था कि जब भी किसी को ज़रूरत पड़ेगी एक दूसरे की मदद की तो एक दूसरे की मदद करेंगे। अल्लामा इब्न असुीर असदुल ग़ाबह में तहरीर करते हैं कि यह कोई मतभेद नहीं है क्योंकि बनू तरीफ बनू साइदा की ही एक शाख़ है। हज़रत ज़मुरह जंगे बदर और जंगे उहद में सम्मिलित हुए जंगे उहद में आप शहीद हुए।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 3 पृष्ठ 60-61 ज़मुरा बिन अमरो अलजहनी । दारुल कुतुब अल्इिलिमया बेरूत 2003 ई)

फिर जिन सहाबी का ज़िक्र है उनका नाम है हज़रत सअद बिन सुहैल। हज़रत सअद अंसार में से थे। कुछ ने आपका नाम सईद बिन सुहैल रज़ि वर्णन किया है। हज़रत सअद जंगे बदर और उहद में सम्मिलित हुए आप की एक बेटी थी जिसका नाम हुज़ैलह था।

(असदुल ग़ाब फ़ी मारफ़तुल अलसहाब जिल्द 2पृष्ठ439 सअद बिन सुहेल दारुल कुतुब अल्इिलिमया बेरूत 2003 ई) (अत्तबक़ातुल कुबरा ले इब्ने साद जिल्द 3 पृष्ठ 395 सईद बिन सुहेल दारुल कुतुब अल्इिलिमया बैरूत 1990 ई)

उनका ज़िक्र बस इतना ही मिलता है।

फिर हज़रत सअद बिन उबैद रज़ि सहाबी हैं जो बदरी सहाबी थे। उनका ज़िक्र करता हूँ। हज़रत सअद बिन उबैद जंगे बदर, उहद, ख़ंदक़ समेत सारी जंगों में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल हुए। आप का नाम सईद भी वर्णन हुआ है। आप क़ारी के लक़ब से मशहूर थे। आप की कुनिय्यत अबूज़ैद थी। हज़रत सअद बिन उबैद की गिनती उन चार सहाबा में होती है जिन्होंने अंसार में से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में क़ुरआन जमा किया था। आप के बेटे उमैर बिन सअद हज़रत उमर के ख़िलाफ़त के ज़माना में सीरिया के एक हिस्सा के निगरान थे। एक रिवायत के अनुसार हज़रत सअद बिन उबैद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में मस्जिद क़ुबा में इमामत करते थे। हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ी अल्लाह तआला अन्हो और हज़रत उम्र रज़ी

अल्लाह तआला अन्हो के दौर में भी इस इमामत पर मामूर थे। हज़रत साद बिन उबैद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो हिजरत के 16 वें साल जंग क़ुदसिया में शहीद हुए। शहादत के वक़्त आपकी उम्र 64 साल थी।

अबदुर्ररहिमान बिन अबू लैला से रिवायत है कि जंग जिसर जो 13 हिज्री में हुई इस में मुसलमानों को काफ़ी नुक़्सान हुआ था। हज़रत साद बिन उबैद शिकस्त खा कर वापस आए, पीछे हट गए थे तो हज़रत उमर ने हज़रत सअद बिन उबैद से फ़रमाया कि शाम देश में जिहाद से दिलचस्पी है? सवाल पूछा। वहां मुसलमानों से बहुत सख्त लड़ाई की गई है। मुसलमानों को बड़ा नुक़्सान पहुंचाया गया है। अगर तुम्हें शौक़ है तो फिर वहां चले जाओ और दुश्मन की इस कत्ल के कारण से जो नुक़्सान पहुंचा है इस से दुश्मन उन पर दिलेर हो गए हैं तो हज़रत उमर ने उनको फ़रमाया कि शायद आप अपने ऊपर लगी हुई शिकस्त की बदनामी का दाग़ धो सकें क्योंकि यहां अर्थात जंग जिसर से वापस आए तो मुसलमानों को नुक़्सान हुआ था तो हज़रत उमर ने आप को कहा कि अगर इस बदनामी का, शिकस्त का दाग़ धोना है तो वहां सीरिया की तरफ़ भी जंग हो रही है । हज़रत सअद ने निवेदन क्या नहीं। मैं सिवाए इस ज़मीन के और कहीं नहीं जाऊँगा जहां से मैं भागा हूँ या नाकाम वापस आया हूँ और उन दुश्मनों के मुक़ाबला पर ही निकलूँगा जिन्होंने मेरे साथ जो करना था क्या अर्थात मुराद यह थी कि लड़ाई में वे ग़ालिब आ गए। अत: हज़रत साद बिन उबेयद रज़ि क़ादसिया आए और वहां लड़ते लड़ते शहीद हो गए। अब्दुल रहमान बिन अबू लैला रिवायत करते हैं कि हज़रत साद बिन उबैद ने लोगों से नसीहत की और कहा कि कल हम दुश्मन का मुक़ाबला करेंगे और कल हम शहीद होंगे। अत: तुम लोग ना हमारे बदन से ख़ून धोना और ना ,सिवाए उन कपड़ों के जो हमारे बदन पर हैं ,कोई और देना।

(अत्तबक़ातुल कुबरा ले इब्ने साद जिल्द 3 पृष्ठ 349 साद बिन उबीद दारुल कुतुब अल्इिलिमया बेरूत1990 ई)(असदुल ग़ाब फ़ी मारफ़:तिस्सहाब जिल्द 2 पृष्ठ445 सअद बिन उबैद दारुल कुतुब अल्इिलिमया बेरूत 2003 ई)(अल असाबा फ़ी तमीईज़िस्साहब: जिल्द 3 पृष्ठ57 सअद बिन उबैद दारुल कुतुब अल्इिलिमया बेरूत 1995 ई)

जंग जिसर का कछ विस्तार एक ख़ुत्बा जुम्अ: में पहले वर्णन किया जा चुका है इस बारे में कुछ और थोड़ा वर्णन कर देता हूं। जैसा कि मैं ने बताया कि जंग जिसर 13 हिजरी में दिरया फुरात के किनारे मुसलमानो और ईरानियों के मध्य लड़ी गई थी। और मुसलमानों की तरफ से लश्करके सालार अबू उबैदह सकफी रज़ि थे। जब कि ईरानियों की तरफ से बहमन जेदिवया सालार था मुसलमान फौज की संख्या दस हज़ार थी जब कि ईराइनियों की फौज में तीस हज़ार फौजी और तीन सौ हाथी थे। दरिया फुरात के बीच में आने के कारण से अर्थात दरिया फुरात बीच में था इसलिए दोने फौजें कुछ समय तक लड़ाई से रुकी रहीं। यहां तक को दोनों पक्षों के आपस में राज़ी होने से फुरात दरिया पर एक जिसर अर्थात पुल बनाया गया इसी पुल के कारण से इस को जंग जिसर कहा जाता है। जब पुल तैय्यार हो गया ता बहमन जादिवया ने हज़रत अबू उबैदह: को कहला भेजा की तुम दरिया पार कर के आओगे या हमें दरिया पार कर`क आने के आज्ञा दोगे। हज़रत उबूउबैदह रज़ि की राय थी कि मुसलमान फौज दरिया पार कर के विरोधी गिरोह से जंग करे। जबकि लश्कर के सरदार जिनमें हज़रत सल्लीतओ भी थे इस राय के ख़िलाफ़ थे लेकिन हज़रत अबू उबैद ने दरिया फ़ुरात को उबूर कर के अहले फ़ारस के लश्कर पर हमला कर दिया। थोड़ी देर तक लड़ाई ऐसे ही चलती रही। कुछ देर बाद बहमन जादुविया ने अपनी फ़ौज को बिघरते होते देखा। देखा कि ईरानियों की फ़ौज पीछे हट रही है तो उसने हाथियों को आगे बढ़ाने का हुक्म दिया। हाथियों के आगे बढ़ने से मुसलमानों की सफ़ें बे-तरतीब हो गईं। इस्लामी लश्कर इधर उधर हटने लगा। हज़रत अबू उबैद रज़ि ने मुसलमानों को कहा कि हे अल्लाह के बंदो! हाथियों पर हमला करो और उनकी सूंडें काट डालो। हज़रत अबू उबैद रज़ि यह कह कर ख़ुद आगे बढ़े और एक हाथी पर हमला कर के इस की सूंड काट डाली। बाक़ी लश्कर ने भी यही देखकर तेज़ी से लड़ाई शुरू कर दी और कई हाथियों की सूंडें और पांव काट कर उनके सवारों को क़तल कर दिया। इत्तिफ़ाक़ से हज़रत अबू उबैद रज़ि एक हाथी के सामने आए। आप ने वार कर के इस की सूंड काट दी मगर आप इस हाथी के पांव के नीचे आ गए और दब कर शहीद हो गए। हज़रत अबू उबैद रज़ि की शहादत के बाद सात आदमीयों ने बारी बारी इस्लामी झंडा सँभाला और लड़ते हुए शहीद हो गए। आठवें आदमी हज़रत मुसन्ना रज़ि थे जिन्हों ने इस्लामी झंडे को लेकर दुबारा एक पर जोश हमले का इरादा किया लेकिन इस्लामी लश्कर की सफ़ें बे-तरतीब हो गई थीं और लोग निरन्तर सात अमीरों को शहीद होते देखकर इधर उधर भागना शुरू हो गए थे जबकि कुछ दरिया में कूद गए थे। हज़रत मुसन्ना रज़ि और आप के साथी मर्दानगी से लड़ते रहे।अन्त में हज़रत मुसन्ना रज़ि ज़ख़्मी हो गए और आप लड़ते हुए दरिया फ़ुरात उबूर कर के वापस आ गए। इस घटना में मुसलमानों का बहुत ज़्यादा नुक़्सान हुआ। मुसलमानों के चार हज़ार आदमी शहीद हुए जबकि ईरानियों के छ: हज़ार फ़ौजी गए।

(उद्धरित तारीख़ इब्ने ख़ल्दून अनुवादक हकीम अहमद हुसैन इलाहाबादी जिल्द 3पृष्ठ270 से273 प्रकाशन दारुल इशाअत कराची 2003 ई)

बहरहाल यह जंग इसलिए हुई थी कि ईरानियों की तरफ़ से बार-बार हमले हो रहे थे और उन हमलों को रोकने के लिए यह इजाज़त ली गई थी कि जंग करें।

फिर जिन सहाबी का ज़िक्र है हज़रत सहल बिन अतीक रज़ि। उनका नाम सुहैल भी वर्णन किया जाता है। उनकी माता का नाम जमीला बिन्त अलुक़मह था। हज़रत सहल बिन अतीक सत्तर अंसार के साथ बैअत उक़बा सानिया में शामिल हुए। आपने जंगे बदर और उहद में शामिल होने का सौभाग्य पाया।

(तबक़ात अलकुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 387 सहल बिन अतीक़ दारुलकुतब अल्इि-लिमयाबीरोत1990 ई)(असदुल ग़ाब: जिल्द 2 पृष्ठ578 सहल बिन अतीक़ दारु-लकुतब अल्इिलिमया बेरूत 2003 ई)

फिर जिन सहाबी का ज़िक्र है उनका नाम है हज़रत सुहैल बिन राफ़िअ रज़ि। हज़रत सुहैल का सम्बन्ध क़बीला बनू नज्जार से था। वह ज़मीन जिस पर मस्जिद नबवी बनी हुई वह आप और आप के भाई हज़रत सहल की मिल्कियत थी। आप की माता का नाम ज़ुग़ैबह बिन्त सहल था। हज़रत सहल जंगे बदर, उहद और ख़ंदक़ सहित सारी जंगों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हमराह शामिल हुए और हज़रत उमर के ख़िलाफ़त के ज़माना में आप की वफ़ात हुई।

(अत्तबक़ातुल कुबरा ले इब्न साद जिल्द 3 पृष्ठ 372 सुहेल बिन राफ़े, दारुल-कुतब अल्इिलिमया बेरूत 1990 ई)

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिजरत मदीना का ज़िक्र करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने जो तहरीर फ़रमाया है प्रस्तुत करता हूँ। आप लिखते हैं कि

जब आप मदीना में दाख़िल हुए, हर शख़्स की यह इच्छा थी कि आप उस के घर में ठहरें। जिस जिस गली में से आप की ऊंटनी गुज़रती थी इस गली के विभिन्न ख़ानदान अपने घरों के आगे खड़े हो कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इस्तिक़बाल करते थे और कहते थे हे रसूलुल्लाह! यह हमारा घर है और यह हमारा माल है और यह हमारी जानें हैं जो आपकी ख़िदमत के लिए हाज़िर हैं। हे अल्लाह के रसूल! और हम आप की हिफ़ाज़त करने के योग्य हैं। आप हमारे ही पास ठहरें । कुछ लोग जोश में आगे बढ़ते और आप की ऊंटनी की बाग पकड़ लेते ताकि आप को अपने घर में उतरवा लें मगर आप हर एक शख़्स को यही जवाब देते थे कि मेरी ऊंटनी को छोड़ दो यह आज ख़ुदा तआला की तरफ़ से मामूर है। (जो उस को हुक्म होगा। यही समझो कि जहां अल्लाह तआला चाहेगा वहां यह बैठ जाएगी) यह वहीं खड़ी होगी जहां ख़ुदा तआला की इच्छा होगी। आख़िर मदीना के एक सिरे पर बनू नज्जार के यतीमों की एक ज़मीन के पास जा कर ऊंटनी ठहर गई। आप ने फ़रमाया ख़ुदा तआला की यही इच्छा मालूम होती है कि हम यहां ठहरें। फिर फ़रमाया यह ज़मीन किस की है? ज़मीन कुछ यतीमों की थी। उनका निगरान आगे बढ़ा और उसने कहा कि हे रसूल अल्लाह! यह अमुक अमुक यतीम की ज़मीन है और आप की ख़िदमत के लिए हाज़िर है। आप ने फ़रमाया हम किसी का माल मुफ़्त नहीं ले सकते। आख़िर उस की क़ीमत मुक़र्रर की गई और आप ने उस जगह पर मस्जिद और अपने मकानात बनाने का फ़ैसला किया।

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन अनवारुल उलूम जिल्द 20 पृष्ठ 228)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने इस की तफ़सील सीरत ख़ातमन्नबि-य्यीन में कुछ इस तरह लिखी है कि

मदीना के निवास का सबसे पहला काम मस्जिद नबवी की स्थापना था जिस जगह आप की ऊंटनी आकर बैठी थी वह मदीना के दो मुसलमान बच्चों सहल और सुहैल की मिल्कियत थी जो हज़रत असुअद बिन ज़ुरार: रज़ि की निगरानी में रहते थे। यह एक वीरान जगह थी। अर्थात बिलकुल बंजर, ग़ैर-आबाद जगह थी जिसके एक हिस्सा में कहीं कहीं ख़जूरों के दरख़्त थे। एक दो दरख़्त लगे हुए थे। और दूसरे हिस्सा में कुछ खन्डर इत्यादि थे गिरे हुए मकान थे, खन्डर थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे मस्जिद और अपने कमरों के बनाने के लिए

पसन्द फ़रमाया और दस दीनार ..... में यह ज़मीन ख़रीद ली गई और जगह को बराबर कर के और दरख़्तों को काट कर मस्जिद नबवी की स्थापना शुरू हो गई।

(उद्धरित सीरत ख़ातमुन्निबय्यीन हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ 269)

एक रिवायत के अनुसार इस ज़मीन की यह जो रक़म थी हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने अदा की थी।

(शरह जरक़ानी जिल्द 2 पृष्ठ186 दारुल कुतुब अल्इिलमी बेरूत 1996ई)

फिर लिखते हैं कि जगह को बराबर कर के और दरख़्तों को काट कर मस्जिद नबवी के बनाने के काम शुरू हो गए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुद दुआ मांगते हुए बुनियाद का पत्थर रखा और जैसा कि क़ुबा की मस्जिद में हुआ था सहाबा ने मुअम्मारों और मज़दूरों का काम किया जिस में कभी कभी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुद भी शिरकत फ़रमाते थे। कई बार ईंटें उठाते हुए सहाबा हज़रत अबदुल्लाह बिन रवाहा अन्सारी का यह शेअर पढ़ते थे कि

هَذَا الْحِمَالُ لَا حِمَالَ خَيْبَر، هَذَا أَبَرُّ رَبَّنَا وَأَطْهَرُ

अर्थात यह बोझ ख़ैबर के व्यापारिक माल को बोझ नहीं है जो जानवरों पर लद कर आया हो बल्कि है मेरे मौला यह बोझ तक्वा तथा तहारत का बोझ है जो हम तेरी प्रसन्नता के लिए उठाते है। और कभी कभी सहाबा कराम हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा का यह शेर भी पढ़ते थे

اَللّٰهُمَّ اِنَّ الْاَجْرَ اَجْرُ الْاٰخِرَه، فَارْحَمِ الْاَنْصَارَ وَالْمُهَاجِرَه

अर्थात ए हमारे अल्लाह! वास्तिवक बदला तो सिर्फ आख़िरत का बदला है अत: तू अपने फ़ज़ल से अंसार और मुहाजिरीन पर अपनी रहमत नाज़िल फ़र्मा। जब सहाबा ये शेअर पढ़ते थे या अशआर पढ़ते थे तो कई बार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी उनकी आवाज़ के साथ आवाज़ मिला देते थे और इस तरह एक लंबे समय की मेहनत के बाद यह मस्जिद पूर्ण हुई। मस्जिद की इमारत पत्थरों की सिलों और ईंटों की थी जो लक्कड़ी के खंबों के मध्य चुनी गई थी। इस ज़माने में मज़बूत इमारत के लिए यह रिवाज था कि लक्कड़ी के बलॉक खड़े कर के ,खम्बे बना कर या pillar बना कर उस के अन्दर ईंटें और मिट्टी की दीवारें लगाई जाती थी ताकि मज़बूती क़ायम रहे। ये उस का स्ट्रक्चर (structure) होता था और छत पर खजूर और तने और शाख़ें डाली गई थीं। मस्जिद के अंदर छत के सहारे के लिए खजूर के खंबे थे और जब तक मिंबर की तजवीज़ नहीं हुई, वो मिंबर जहां खड़े हो के आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुत्बा दिया करते थे उन्ही खंभों में से एक खंबा के साथ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुत्बा के वक़्त टेक लगा कर खड़े हो जाते थे। मस्जिद का फ़र्श कच्चा था और चूँकि ज़्यादा बारिश के वक़्त छत टपकने लगती थी इसलिए ऐसे समय में फ़र्श पर कीचड़ हो जाता था। अत: इस तकलीफ़ को देखकर बाद में कंकरियों का फ़र्श बनवा दिया गया। छोटे छोटे पत्थर वहां डाले गए। शुरू शुरू में मस्जिद का मुंह बैतुल-मुक़द्दस की तरफ़ रखा गया था लेकिन क़िब्ला बदलने के वक़्त यह रुख बदल दिया गया। मस्जिद की बुलंदी अर्थात height उस वक़्त दस फुट थी (छत दस फुट ऊंची थी)। और लम्बाई एक सौ पाँच फुट (लंबाई एक सौ पाँच फुट थी) और चौड़ाई 90 फुट के क़रीब था (चौड़ाई जो थी नव्वे फुट थी) लेकिन बाद में इस का विस्तार कर दिया गया। यह भी जो 105 फुट और 90 फुट का क्षेत्रफल बनता है यह लगभग पंद्रह सोला सौ नमाज़ियों के लिए जगह बनती है।

मस्जिद के एक किनारे में एक छतदार चबूतरा बनाया गया था जिसे सुफ़्फ़ह कहते थे। यह उन ग़रीब मुहाजरीन के लिए था जो बेघर थे, जिनका घर कोई नहीं होता था। यह लोग यहीं रहते थे और अस्हाबु-स्सुफ़्फ़ह कहलाते थे। उनका काम मानो दिन रात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की संगत में रहना, इबादत करना और क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत करना था। इन लोगों का कोई स्थायी आय का साधन न था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुद उनका ध्यान फ़रमाते थे और जब कभी आप के पास कोई हद्या इत्यादि आता था या घर में कुछ होता था तो उनका हिस्सा ज़रूर निकालते थे। इन लोगों का खाना पीना अक्सर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम किया करते थे बल्कि कई बार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुद भूखे रहते और जो कुछ घर में होता था वह सहाबा अस्सुफा को भिजवा देते थे। अंसार भी उन लोगों की मेहमान-नवाज़ी मैं यथा सामर्थय व्यस्त रहते थे और उनके लिए ख़जूरों के गुच्छे ला ला कर मस्जिद में लटका दिया करते थे। लेकिन इस के बावजूद उनकी हालत तंग रहती थी और कई बार भूख तक नौबत पहुंच जाती थी और यह हालत कई साल तक जारी रही। यहां तक कि कुछ तो मदीना की आबादी के बढ़ने के कारण इन लोगों के लिए काम निकल आया मज़दूरी इत्यादि मिलने लग गई और कुछ क़ौमी बैतुल माल से सहायता की सूरत पैदा हो गई। हालात बेहतर हुए तो उनकी मदद होने लग गई।

मस्जिद के साथ जुड़ा हुआ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए रिहायशी मकान तैयार किया गया था। मकान किया था एक दस पंद्रह फुट का छोटा सा कमरा था और इस कमरे और मस्जिद के मध्य एक दरवाज़ा रखा गया था जिस में से गुज़र कर आप नमाज़ इत्यादि के लिए मस्जिद में तशरीफ़ लाते थे। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने और शादियां कीं तो उसी कमरे के साथ साथ दूसरे कमरे भी तैयार होते गए और मस्जिद के आस-पास कुछ और सहाबा के मकान भी तैयार हो गए।

यह थी मस्जिद नबवी जो मदीना में तैयार हुई और इस ज़माना में चूँकि और कोई पब्लिक इमारत ऐसी नहीं थी जहां क़ौमी काम अंजाम दिए जाते। इसलिए इवान-ए-हुकूमत का काम भी यही मस्जिद देती थी। यही दफ़्तर था। यही हुकूमत का पूरा सेक्रिटेरियट (secretariat)था । यहीं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मज्लिस लगती थी। यहीं सारे किस्म के मश्वरे होते थे। यहीं मुक़द्दमो का फ़ैसला किया जाता था। यहीं से आदेश जारी किए जाते थे। यही क़ौमी मेहमान ख़ाना था अर्थात कि जो मेहमान ख़ाना था वह भी यही मस्जिद ही था। और हर क़ौमी काम जो था वह इसी मस्जिद में अंजाम दिया जाता था। और ज़रूरत होती थी तो इसी से जंगी क़ैदीयों को कैद करने के स्थान का काम भी लिया जाता था अर्थात यहीं मस्जिद में जंगी क़ैदी भी रखे जाते थे और बहुत सारे क़ैदी ऐसे भी थे जब मुसलमानों को इबादत करते और आपस की मुहब्बत और प्यार देखते थे तो उन में से फिर मुसलमान भी हुए। बहरहाल उस के बारे में सर विलियम म्यूर भी ज़िक्र करता है जो एक मुस्तश्रिक़ है और इस्लाम के ख़िलाफ़ भी और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ भी काफ़ी लिखता है, लेकिन वह यहां उस के बारे में लिखता है कि

मानो यह मस्जिद बनाए जाने की दृष्टि के लिहाज़ से निहायत सादा और मामूली थी लेकिन मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की यह मस्जिद इस्लामी तारीख़ में एक ख़ास शान रखती है। रसूले ख़ुदा और उनके सहाबा उसी मस्जिद में अपने वक़्त का अधिकतर हिस्सा गुज़ारते थे। यहीं इस्लामी नमाज़ का बाक़ायदा जमाअत के साथ आरम्भ हुआ। यहीं सारी मुसलमान जुम्आ के दिन ख़ुदा की ताज़ा वह्य को सुनने के लिए शिष्टाचारपूर्वक हालत में जमा होते थे। यहीं मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी विजयों के परामर्श पुख़्ता किया करते थे। यहीं वह मकान था जहां पराजित और तौब: करने वाले क़बीले के वफ़द उनके सामने पेश होते थे। यही वह दरबार था जहां से वह शाही आदेश जारी किए जाते थे जो अरब के दौर दूर कोनों तक बाग़ीयों को ख़ौफ़ से भयभीत कर देता थे और अन्त में उसी मस्जिद के पास अपनी बीवी आयशा रज़ि अल्लाह के कमरा में मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी जान दी और इसी जगह अपने दो ख़लीफों के साथ वह दफ़न हैं।

यह मस्जिद और इस के साथ के कमरे कम से कम सात माह के समय में तैयार हो गए और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने नए मकान में अपनी बीवी हज़रत सौदह रज़ि के साथ तशरीफ़ ले गए। कुछ दूसरे मुहाजिरीन ने भी अंसार से ज़मीन हासिल करके मस्जिद के आस-पास मकाना तैयार कर लिए और जिन्हें मस्जिद के क़रीब ज़मीन नहीं मिल सकी उन्होंने दूर दूर मकान बना लिए और कुछ को अंसार की तरफ़ से बने बनाए मकान मिल गए।

(उद्धरित सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ269 से 271)

बहरहाल हज़रत सुहैल और उनके भाई वे ख़ुश-क़िस्मत थे जिनको इस्लाम के इस महान केन्द्र में अपनी ज़मीन पेश करने की तौफ़ीक़ मिली।

फिर जिन सहाबी का ज़िक्र है उनका नाम है हज़रत साद बिन ख़ैसमह: रज़ि। हज़रत साद बिन ख़ैसमह: रज़ि का सम्बन्ध क़बीला ओस से था। आप की माता का नाम हिंद बिन्त औस था। हज़रत अबू ज़य्याह नुअमान बिन साबत रज़ि जो कि बदरी सहाबी हैं माता की तरफ़ से आप के भाई थे। आप की कुनिय्यत अबू ख़ैसमह: और अबू अब्दुदल्लाआ वर्णन की जाती है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत साद बिन ख़ैसमह: के और हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुल असद के मध्य भाईचारा स्थापित फ़रमाया था।

(अत्तबक़ातुल कुबरा ले इब्ने साद जिल्द 3 पृष्ठ 366-367 साद बिन ख़ैसमा, दारुल कुतुब अल्इिलिमया बेरूत 1990 ई)(असदुलग़: फ़ी मअरफ़ तुल सहाबा जिल्द 2 पृष्ठ 429 साद बिन ख़ैसमा, दारुल कुतुब अल्इिलिमया बेरूत 2003 ई)

हज़रत साद उन बारह नक़ीबों में से थे जिन्हें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि

वसल्लम ने बैअत उक़बा सानिया के मौक़ा पर मदीना के मुसलमानों का नक़ीब मुक़र्रर फ़रमाया था। बारह नक़ीब किस तरह मुक़र्रर हुए। इस की कुछ तफ़सील और नक़ीबों के नाम और काम के बारे में भी बताता हूँ जो सीरत ख़ातमुल अंबिया में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने लिखा है कि

13 नबवी के महीना ज़िल- हज्जा में हज के मौक़ा पर औस और ख़ज़रज के कई सौ आदमी मक्का में आए। उनमें से सत्तर शख़्स ऐसे शामिल थे जो या तो मुसलमान हो चुके थे या अब मुसलमान होना चाहते थे और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मिलने के लिए मक्का आए थे। मुसअब बिन उमैर रज़ि भी उनके साथ थे। मुसअब की माँ ज़िंदा थी और यद्यपि मुशरिका थी मगर उनसे बहुत मुहब्बत करती थीं। जब उसे उनके आने की ख़बर मिली तो उसने उनको कहला भेजा कि पहले मुझ से आकर मिल जाओ फिर कहीं दूसरी जगह जाना। मुसअब रज़ि ने जवाब दिया कि मैं अभी तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से नहीं मिला। आप से मिलकर, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मिलकर फिर आपके पास आऊँगा। अत: वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास हाज़िर हुए आप से मिलकर और ज़रूरी हालात निवेदन कर के फिर अपनी माँ के पास गए। वह बहुत जली भुनी बैठी थीं। उनको देखकर बहुत रोई और बड़ा शिकवा किया। मुसअब रज़ि ने कहा माँ मैं तुम से एक बड़ी अच्छी बात कहता हूँ जो तुम्हारे लिए बहुत ही लाभदायत है और सारे झगड़ों का फ़ैसला हो जाता है। उसने कहा वह क्या है? मुसअब ने धीरे से जवाब दिया कि बस यही कि बुतपरस्ती तर्क कर के मुसलमान हो जाओ और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान ले आओ। वह पक्की मुशरिका थी सुनते ही शोर मचा दिया कि मुझे सितारों की क़सम है मैं तुम्हारे धर्म में कभी दाख़िल नहीं होंगी और अपने रिश्तेदारों को इशारा किया कि मुसअब रज़ि को पकड़ कर क़ैद कर लें मगर वह भाग गए।

बहरहाल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मुसअब रज़ि से अंसार के आने की सूचना मिल चुकी थी और उनमें से कुछ लोग आप से अलग रूपसे मुलाक़ात भी कर चुके थे मगर चूँकि इस मौक़ा पर एक सामूहिक और अलग मुलाक़ात की ज़रूरत थी अर्थात अलग मुलाक़ात होनी चाहिए थी इसलिए हज की रस्मों को अदा करने के बाद ज़िल हज्जा की मध्य तारीख़ मुक़र्रर की गई कि इस दिन आधी रात के क़रीब ये सब लोग पिछले साल वाली घाटी में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को आकर मिलें ताकि इतमीनान और शान्ति के साथ अलग बातचीत हो सके और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अन्सार को ताकीद फ़रमाई कि इकट्ठे ना आएं बल्कि एक एक दो दो कर के आएं दुश्मन की नज़र पड़ सकती है और वक़्त मुक़र्ररा पर घाटी में पहुंच जाएं और अगर कोई सोया हुआ है तो सोते को ना जगाएँ और न गैरहाज़िर का इंतिज़ार करें। अत: जब मुक़र्ररा तारीख़ आई तो रात के वक़्त जबकि एक तिहाई रात जा चुकी थी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अकेले घर से निकले और रास्ते में अपने चाचा अब्बास को साथ लिया जो अभी तक इस्लाम नहीं लाए थे, मुशरिक थे मगर आप से मुहब्बत रखते थे और ख़ानदान हाशिम के रईस थे। और फिर दोनों मिलकर इस घाटी में पहुंचे। अभी ज़्यादा देर ना हुई थी कि अंसार भी एक एक दो दो कर के आ पहुंचे। ये सत्तर आदमी थे और ओस और ख़ज़रज दोनों क़बीलों से सम्बन्ध रखने वाले थे। सबसे पहले अब्बास ने बातचीत शुरू की अर्थात हज़रत अब्बास जो अभी इस्लाम नहीं लाए थे कि हे ख़ज़रज के गिरोह! मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने ख़ानदान में एक सम्मान्नीय और महबूब है और वह ख़ानदान आज तक उस की हिफ़ाज़त का ज़ामिन रहा है और हर ख़तरे के वक़्त में इस के लिए मैदान में रहा हुहै मगर अब मुहम्मद का इरादा अपना वतन छोड़कर तुम्हारे पास चले जाने का है। अत: अगर तुम उसे अपने पास ले जाने की इच्छा रखते हो तो तुम्हें उस की हर तरह हिफ़ाज़त करनी होगी और हर दुश्मन के सामने मुकाबिल होना पड़ेगा।अगर तुम उस के लिए तैयार हो तो बेहतर वर्ना अभी से साफ़ साफ़ जवाब दे दो क्योंकि साफ़ साफ़ बात अच्छी होती है। बरार बिन मअरूर रज़ि जो अंसार के क़बीले के एक वृद्ध और प्रभाव वाले बुज़ुर्ग थे उन्होंने कहा कि अब्बास हमने तुम्हारी बात सुन ली है मगर हम चाहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुद भी अपनी मुबारक ज़बान से कुछ फरमाएं और जो ज़िम्मेदारी हम पर डालना चाहते हैं वह वर्णन फ़रमाएं। इस पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ुरआन शरीफ़ की कुछ आयतें तिलावत फ़रमाएं और फिर एक संक्षिप्त सी तक़रीर में इस्लाम की तालीम वर्णन फ़रमाई और अल्लाह तआला के हुकूक और बन्दों के हुक़ूक़ की व्याख्या करते हुए फ़रमाया कि मैं अपने लिए सिर्फ इतना चाहता हूँ कि जिस तरह तुम अपने प्यारों और रिश्तेदारों की हिफ़ाज़त करते हो इसी तरह अगर ज़रूरत पेश आए तो मेरे साथ भी मामला करो। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक़रीर ख़त्म कर चुके तो बरार बिन मअरूर ने अरब के नियम के अनुसार आपका हाथ अपने हाथ में लेकर कहा हे रसूलुल्लाह! हमें उस ख़ुदा की क़सम है जिसने आपको हक़ और सदाक़त के साथ मबऊस फ़रमाया है कि हम अपनी जानों की तरह आपकी हिफ़ाज़त करेंगे। हम लोग तलवारों के साय में पले हैं और बात यह कह ही रहे थे, अभी बात ख़त्म नहीं हुई थी कि अबूल हसीम बन तय्यान एक और आदमी वहां बैठा था, उसने उनकी बात काट कर कहा कि हे रसूलुल्लाह! (यह भी मुसलमान हो गए थे) यसरिब के यहूद के साथ हमारे पुराने सम्बन्धा हैं ,आप का साथ देने से वे विच्छेद हो जाऐंगे। ऐसा ना होके जब अल्लाह तआला आप को ग़लबा दे तो आप हमें छोड़कर अपने वतन में वापस तशरीफ़ ले आएं और हम ना इधर के रहें और ना उधर के रहें। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हंसकर फ़रमाया कि नहीं नहीं ऐसा हरगिज़ नहीं होगा। तुम्हारा ख़ून मेरा ख़ून होगा। तुम्हारे दोस्त मेरे दोस्त और तुम्हारे दुश्मन मेरे दुश्मन। इस पर अब्बास बिन उबादत अन्सारी ने अपने साथीयों पर नज़र डाल कर कहा कि लोगो! क्या तुम समझते हो कि इस अह्द तथा वादा के क्या अर्थ हैं? इस का यह मतलब है कि तुम्हें हर काले गोरे के मुक़ाबले के लिए तैयार होना चाहिए। हर आदमी जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का विरोध करेगा उस का मुक़ाबला करने के लिए तुम्हें तैयार होना पड़ेगा और हर क़ुर्बानी के लिए तैय्यार रहना चाहिए। लोगों ने कहा हाँ हम जानते हैं मगर हे अल्लाह के रसूल! उस के बदले में हमें क्या मिलेगा? फिर उन लोगों ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा कि हम तो ये सब कुछ करेंगे हमें क्या मिलेगा? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हें ख़ुदा की जन्नत मिलेगी जो उस के सारे इनामों में से बड़ा इनाम है। सब ने कहा कि हमें ये सौदा मंज़ूर है हे अल्लाह के रसूल! आप अपना हाथ आगे करें। आप ने अपना मुबारक हाथ आगे बढ़ाया और ये सत्तर जानिसारों की जमाअत एक प्रतिरक्षात्मक सन्धि में आपके हाथ पर बिक गई। इस बैअत-ए-का नाम बैअत उक़बा सानिया है।

जब बैअत हो चुकी तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे फ़रमाया कि मूसा अलैहिस-सलाम ने अपनी क़ौम में से बारह नक़ीब चुने थे जो मूसा की तरफ़ से उनके निगरान और मुहाफ़िज़ थे। मैं भी तुम में से बारह नक़ीब मुक़र्रर करना चाहता हूँ जो तुम्हारे निगरान और मुहाफ़िज़ होंगे और वह मेरे लिए ईसा के हवारियों की तरह होंगे और मेरे सामने अपनी क़ौम के बारे में जवाब देने वाले होंगे। अत: तुम उचित लोगों के नाम चुन कर के मेरे सामने पेश करो। अत: बारह आदमी चुने गए जिन्हें आप ने मंज़ूर फ़रमाया और उन्हें एक एक क़बीले का निगरान मुक़र्रर कर के उनके कर्तव्य समझा दिए और कुछ क़बीलों के लिए आप ने दो दो नक़ीब मुक़र्रर फ़रमाए। बहरहाल इन बारह नक़ीबों के नाम ये हैं

असअद बिन ज़ुरअर। उसैद बिन अलहुज़ैर। अबुल हैसम मालिक बन तय्यान। साद बिन उबादा। बरार बिन मअरूर। अब्दुल्लाआ बिन रवाहाह। उबअदा बिन सामित। सअद बिन रबीअ। राफ़िअ बिन मालिक। अब्दुल्लाआ बिन अमरो और सअद बिन ख़ैसमह: (जिनका ज़िक्र चल रहा है। यह साद बिन ख़ैसमह: भी इन नक़ीबों में से एक नक़ीब थे) और मुनज़िर बिन अमरो।

(उद्धरित सीरत ख़ातमुन्निबय्यीन लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ए ए पृष्ठ 227 से 232)

हिजरत मदीना के वक़्त क़ुबा में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत कलसूम बिन अल हिदुम रज़ि के घर निवास फ़रमाया। इस बारे में यह भी कहा जाता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत सअद बिन ख़ैसमह: रज़ि के घर निवास फ़रमाया और यह भी कहा जाता है कि निवास आँहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम का हज़रत कुलसूम बिन अल हिदुम रज़ि के घर ही था लेकिन जब आप उनके घर से निकल कर लोगों में बैठते तो वह साद बिन ख़ैसमह: के घर तशरीफ़ फ़र्मा हुआ करते थे।

(अस्सीरतुन्नविबया ले इब्ने कसीर पृष्ठ 215-216 फ़सल फ़ी दख़ूला अलैहि-स्सलाम..... दारुल कुतुब अल्इिलिमया बेरूत 2005 ई)

बैअत उक़बा औला के बाद जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि को मदीना के मुसलमानों की तरबीयत के लिए भिजवाया तो कुछ समय बाद उन्होंने आप से नमाज़ जुमा की इजाज़त चाही। इस पर आप ने उन्हें इजाज़त दी और जुमा के बारे में हिदायत फ़रमाई। अत: इन हिदायतों के अधीन मदीना में जो पहला जुमा अदा किया गया वह हज़रत सअद बिन ख़ैसमह: रज़ि के घर अदा किया गया।

(अत्तबक़ातुल कुबरा जिल्द 3पृष्ठ 87-88 मसअब अलख़ैर, दारुलकुतब

अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

ये उद्धरण अत्तबक़ातुल कुबरा का है । हज़रत साद बिन ख़ैसमह: रज़ि का क़ुबा में एक कुँआं था जिसे अलग़रस कहा जाता था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस से पानी पिया करते थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस कुँएं के बारे में फ़रमाया कि यह जन्नत के चश्मों में से है और इस का पानी बेहतरीन है।अर्थात बहुत अच्छा मीठा ठंडा पानी था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद आपको इसी कुँएं के पानी से ग़ुसल दिया गया। हज़रत अली रज़ि से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब मेरी वफात हो जाए तो बेअरे ग़रस से सात डोल ला कर उस के पानी से मुझे ग़ुसल देना। अबू जाफ़र मुहम्मद बिन अली रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तीन बार ग़ुसल दिया गया। आप को पानी और बेरी के पत्तों से क़मीज़ में ही ग़ुसल दिया गया। अर्थात क़मीज़ नहीं उतारी गई थी। हज़रत अली रज़ि, हज़रत अब्बास रज़ि और हज़रत फ़ज़ल रज़ि ने आप को ग़ुसल दिया और एक रिवायत के अनुसार हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि हज़रत शुक़्रान रज़ि और हज़रत औस बिन ख़ौली रज़ि भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ग़ुसल देने में सम्मिलित थे।

(अत्तबक़ातुल कुब्रा ले इब्न साद जिल्द 2 पृष्ठ 214 ज़िक्र ग़ुसल रसूलुल्लाह, दारुल कुतुब अल्इिलिमिया बेरूत 1990 ई)(सुनन इब्न माजा किताबुल जनाइज़ बाब मा जाअ फ़ी ग़ुसलुन्नबी हदीस नंबर1468)(सबलुल हुदा वर्रिशाद जिल्द 7 पृष्ठ229 अलबाब अल-अव्वल: प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इिलिमिया बेरूत 1993ई)

क़ुरैश के अत्याचोरों से तंग आकर मदीना हिजरत करने वाले बहुत सारे मुसलमानों की पहली मंज़िल प्राय हज़रत साद बिन ख़ैसमह: का घर हुआ करती थी। जो लोग भी हिजरत कर के आते थे वो हज़रत साद बिन ख़ैसमह: के घर ठहरा करते थे। जैसे हज़रत हमज़ह रज़ि । उन में से कुछ लोगों के नाम जो मिलते हैं वे ये हैं: हज़रत हमज़ह रज़ि, हज़रत ज़ैद बिन हारसह रज़ि, हज़रत अबू कब्शह रज़ि मौला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, जो ग़ुलाम थे। हज़रत अबदुल्लाह बिन मसूद रज़ि इत्यादि। जब उन्होंने हिजरत की तो हज़रत साद बिन ख़ैसमह: रज़ि के घर ठहरे।

(अत्तबक़ातुल कुबरा ले इब्न साद जिल्द 3 पृष्ठ6,32, 6,112, दारुलकुतब अल्इिलिमिया बेरूत 1990 ई)

सुलैमान बिन अब्बान रिवायत करते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बदर के लिए निकले तो हज़रत साद बिन ख़ैसमह: रज़ि और आप के पिता दोनों ने आप के साथ जाने का इरादा किया और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने यह बात निवेदन की गई कि दोनों बाप बेटा घर से निकल रहे हैं। इस पर आप ने हिदायत फ़रमाई कि इन दोनों में से सिर्फ एक जा सकता है। वे दोनों क़ुरआ अंदाज़ी कर लें । हज़रत ख़ैसमह: ने अपने बेटे साद से कहा कि हम में से एक ही जा सकता है। तुम ऐसा करो कि औरतों के पास वहां निगरानी के लिए, हिफ़ाज़त के लिए रुक जाओ। हज़रत साद ने कहा कि अगर जन्नत के इलावा कोई और मामला होता तो मैं ज़रूर आप को प्राथिमकता देता लेकिन मैं ख़ुद शहादत का इच्छुक हूँ। इस पर इन दोनों ने क़ुरआ अंदाज़ी की तो क़ुरआ हज़रत साद के नाम निकला। आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ बदर के लिए निकले और जंग बदर में शहीद हो गए।

(अलमुसतदरक अल सहीहैन लिल्हाकिम जिल्द 3 पृष्ठ 209 वमन मनाक़िब साद बिन ख़ैसमा हदीस 4866, दारुल कुतुब अल्इिलिमिया बेरूत 2002 ई)

आप को अम्रो बिन अबदे वुद्द ने शहीद किया और एक कथन के अनुसार तुऐमह बिन अदी ने आप को शहीद किया था। तुऐमह को हज़रत हमज़ह ने जंग बदर में और अम्रो बिन अबदे वुद्द को हज़रत अली रज़ि ने जंग ख़ंदक़ में क़तल किया था।

(असदुल ग़ाब: फ़ी मारफ़: अलसहाब: जिल्द 2 पृष्ठ 429 साद बिन ख़ैसमा, दारुल कुतुब अल्इिलिमिया बेरूत 2003 ई)

हज़रत अली रज़ि फ़रमाते हैं कि बदर के दिन जब दिन चढ़ गया और मुसलमानों और (एक रिवायत यह है) मुसलमानों और कुफ़्फ़ार की सफ़ें आपस में मिल गईं अर्थात जंग शुरू हो गई तो मैं एक आदमी के पीछा में निकला तो मैं क्या देखता हूँ कि एक रेत के टीले पर हज़रत साद बिन ख़ैसमह: एक मुशरिक से लड़ रहे हैं यहां तक कि इस मुशरिक ने हज़रत सअद रज़ि को शहीद कर दिया। वह मुशरिक लोहे की ज़िरह पहने घोड़े पर सवार था फिर वह घोड़े से नीचे उतरा। उसने मुझे पहचान लिया था लेकिन में उसे ना पहचान सका। इस ने मुझे लड़ाई के लिए ललकारा। मैं उस की तरफ़ बढ़ा। जब वह आगे बढ़कर मुझ पर हमला करने लगा तो मैं नीचे को पीछे हटा ताकि बुलंदी से मेरे क़रीब आ जाए। ज़्यादा ऊंचा ना हो। लड़ाई का उसूल है, नीचे आए और क़रीब आ जाए क्योंकि मुझे यह उनुचित लगा कि वह बुलंदी से मुझ पर तलवार से वार करे। जब मैं इस तरह एक क़दम पीछे हट रहा था तब वह बोला कि ए इब्न अबी तालिब! क्या भाग रहे हो? तो मैंने उसे कहा कि قَرِيْبٌ مَفَرٌّ ابنِ الشَّتْرَاء कि अश्शतरा के बेटे का भाग जाना क़रीब है अर्थात कि नामुमकिन है। यह अरबों में एक मुहावरा बन गया था क्योंकि कहते हैं। तारीख़ में लिखा है कि एक डाकू था जो लोगों को लूटने के लिए आता था। लोग इस पर हमले करते तो भाग जाता लेकिन इस का भागना अस्थायी होता था। फिर वह जल्दी मौक़ा पाकर दोबारा हमला कर देता था। अत: यह मुहावरा के रूप में इस्तिमाल होने लगा था कि दांव पेच के लिए पीछे हटो और फिर हमला करो। हज़रत अली कहते हैं कि जब मेरे क़दम जम गए और वह भी मेरे क़रीब पहुंच गया तो उसने अपनी तलवार से मुझ पर हमला किया जिसे मैंने अपनी ढाल पर लिया और इस के कंधे पर इस ज़ोर से वार किया कि मेरी तलवार उस की ज़िरह को चीरती हुई निकल गई। मुझे यक़ीन था कि मेरी तलवार उस का ख़ात्मा कर देगी कि अपने पीछे से मुझे तलवार की चमक महसूस हुई। कहते हैं दूसरा वार अभी करना था कि इतने में मुझे पीछे से तलवार की चमक सी महसूस हुई। मैंने अपना सर फ़ौरन नीचे कर लिया कि पीछे से कोई तलवार आ रही है और वह तलवार इस ज़ोर से इस दुश्मन पर पड़ी कि इस का सुरमा खोद के तन से जुदा हो गया। हज़रत अली रज़ि कहते हैं कि जब मैंने मुड़ कर देखा तो वह हज़रत हमज़ा रज़ि थे। वह इस को कह रहे थे कि मेरे वार को सँभालो कि मैं इब्न अबदुल मुतलिब हूँ ।

(किताबुल मग़ाज़ी लिल्वाक़दी पृष्ठ 92-93 ग़ज़वा बदर, आलेमुल कुतुब 1984 ई) (लुग़ात अलहदीस जिल्द 2 पृष्ठ 431 प्रकाशन अली आसिफ़ प्रिंटर्ज़ रज़ लाहौर 2005 ई)

इस रिवायत से कहते हैं ना कि अमुक ने अमुक को क़तल किया तो यही लगता है कि तुऐमह बिन अदी ने हज़रत साद को शहीद किया था और फिर वह वहीं मारा गया। एक रिवायत के अनुसार जंग बदर में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ दो घोड़े थे एक घोड़े पर हज़रत मुसअब बिन उमयर रज़ि और दूसरे पर हज़रत साद बिन ख़ैसमह: रज़ि सवार थे। हज़रत ज़ुबैर बिन अल् अवाम रज़ि और हज़रत मिक़दाद बिन असद रज़ि भी बारी बारी उन पर सवार हुए।

(दलायलुल नबुव्वत लिल्बहीक़ी जिल्द 3 पृष्ठ 110 सयाक़ क़सस़ बदर, दारुल कुतुब अल्इिलिमिया बेरूत 1988 ई)

जंग बदर में मुसलमानों के पास कितने घोड़े थे? इस के बारे में तारीख़ों में विभिन्न रिवायतें मिलती हैं । हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि का ख़्याल है कि जंगे बदर में मुसलमानों के पास सत्तर ऊंट और दो घोड़े थे।

(उद्धिरत सीरतमुन्नबिय्यीन लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम-ए पृष्ठ 353)

लेकिन यह भी कुछ दूसरी किताबों में लिखा है कि घोड़ों की संख्या तीन और पाँच भी वर्णन हुई है।

(शरह ज़रक़ानी जिल्द 2पृष्ठ 260 बाब ग़ज़वा बदर अलकुबरा प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इिलिमिया बेरूत 1996 ई)(अस्सीरतुल हलिबया जिल्द 2 पृष्ठ 205 बाब ज़िक्र मुग़ाज़ी प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इिलिमिया बेरूत 2002ई)

बहरहाल जो भी साज़ो सामान और घोड़े और ऊंट थे या उनकी तादाद थी उस की काफ़िरों के साज़ो सामान के साथ और घोड़ों की तादाद से तो कोई तुलना ही नहीं थी लेकिन जब मुसलमानों पर हमला हुआ, जंग ठोंसी गई और काफ़िर अपने ख्याल में इसलिए आए कि अब इस्लाम को ख़त्म कर देंगे तो फिर इन मोमिनीन ने अपने सामान की तरफ़ नहीं देखा, घोड़ों की तरफ़ नहीं देखा बल्कि ख़ुदा तआला के लिए एक क़ुर्बानी करने की तड़प थी जैसा कि उनके जवाब से भी ज़ाहिर हो रहा है कि यहां किसी और दुनियावी चीज़ की इच्छा का सवाल नहीं है यहां तो अल्लाह तआला के लिए क़ुर्बानी का सवाल है। इसलिए बेटे ने बाप को कहा कि मैं यहां तुम्हें प्राथमिकता नहीं दे सकता। बहरहाल एक तड़प थी जिसे अल्लाह तआला ने क़बूल फ़रमाया और फिर फ़त्ह भी प्रदान फ़रमाई। अल्लाह तआला हर क्षण इन सहाबा के दर्जात बुलंद फ़रमाता रहे।

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 05 अप्रैल 2019 पृष्ठ 5 से 09)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

की कोशिश करूँगा।

*Mrs. Indre Jasaite साहिबा वर्णन करती हैं:इस जलसा में विभिन्न धर्मों से सम्बन्ध रखने वाले लोगों से मुलाक़ात की और मुझे एहसास हुआ कि विभिन्न धर्मों से सम्बन्ध रखने के बावजूद हम सब मुहब्बत और इन्सानियत के जज़्बे से जुड़े हैं यह इस जलसा का सबसे बड़ा तोहफ़ा है जो मैं अपने साथ लेकर जा रही हूँ।

*एक मेहमान Mr. Dominykas Raudonius अपनी भावनाओं का प्रकट करते हुए वर्णन करते हैं:यह जलसा इस्लाम की अम्न पसंदी और मुहब्बत की अक्कासी करता है मेरे ख़्याल में ऐसे जलसे और ज़्यादा होने चाहिए।

*एक और मेहमान Mr. Rimvydas Markevicius वर्णन करते हैं ख़लीफतुल मसीह का दुआ करने और नमाज़ पढ़ाने का अंदाज़ बहुत प्रभावकारी है। इन की आवाज़ में नर्मी है और उन की आवाज़ में ख़ुदा के लिए बहुत अधिक मुहब्बत मौजूद है जो सुनने वाले को दिली सुकून देती है। मैं ग़ैर मुस्लिम हूँ और मस्जिद में जाने से बहुत घबराता था लेकिन यहां आकर मालूम हुआ कि हर कोई बिना भेदभाव धर्मों के आपके साथ नमाज़ अदा कर सकता है। अब मैं लंदन जा रहा हूँ और वहां भी अहमिदयों के साथ नमाज़ अदा करने आपकी मस्जिद जाया करूँगा।

*एक मेहमान औरत Mrs. Monika Gaidamavicute अपने विचारों को प्रकट करते हुए वर्णन करती हैं:जब एक पाकिस्तानी दोस्त ने जलसे की दावत दी तो पहले तो मैं बहुत डर रही थी क्योंकि बहुत से लोग मुसलमानों को दहश्तगर्द समझते हैं लेकिन मेरे दिल में यह ख़्याल था कि यह जलसा मेरे लिए विशेष साबित होगा। अब मैं यहां मौजूद हूँ मेरे हर तरफ़ मुसलमान हैं जो मुझे मुहब्बत , इज़्ज़त और सम्मान से मिल रहे हैं। अहमदी मुसलमानों का दूसरों के लिए सम्मान खासतौर पर औरतों का सम्मान बहुत अधिक प्रभावित करने वाला है।

*एक दोस्त Mr. Aleksandras Sarapinas साहिब वर्णन करते हैं :मुझे इस जलसा में बहुत मज़ा आया। आपके ख़लीफ़ा साहिब की तक़ारीर का हर शब्द वाज़िह, आमफहम और दिल पर असर करने वाला है। वह मुसलमानों और सारी दुनिया को मुहब्बत का दरस देते हैं। मैं उनकी सेहत सलामती के लिए बहुत दुआ करती हूँ, ख़ुदा उन्हें अपने काम इसी तरह करते रहने की तौफ़ीक़ देता रहे। आमीन । मेरी बेटी और इस का पती अहमदी हैं मेरी इच्छा है कि ख़लीफतुल मसीह उन के लिए बहुत दुआ फ़रमाएं।

*एक मेहमान औरत Mrs. Danguole Sarapiniene वर्णन करती हैं: अहमदी मुसलमान दूसरों की इज़्ज़त और मुहब्बत करने वाले लोग हैं। अहमदी अपने मेहमानों की विशेष ख़िदमत करते हैं और बच्चों को बड़ों का अदब करना सिखाते हैं और आप बहुत ईमानदार लोग हैं। ख़लीफतुल मसीह और दूसरे मुक़र्ररीन की तक़ारीर से इस्लाम के बारे में बहुत कुछ सीखने को मिला।

*एक मेहमान ने अपने प्रतिक्रियाएं वर्णन करते हुए बताया कि इस जलसा में शामिल होने से इस्लाम के बारे में सब ख़ौफ़ और ग़लत-फ़हमियाँ दूर हो गईं दरअसल आप वे लोग हैं जो अमन लाने में प्रमुख किरदार अदा कर रहे हैं।

*एक मेहमान ने कहा कि मैं बहुत प्रभावित हूँ कि कैसे इतनी बड़ी संख्या में लोग गर्मजोशी और ख़ुशखुलक़ी का मुज़ाहरा करते हैं। यह जलसा व्यवस्था और ख़िदमत-ए-ख़लक़ की एक अज़ीम मिसाल है।

*एक मेहमान ने कहा मैं बहुत शुक्रगुज़ार हूँ कि आपने मुझे इस जलसा में शामिल होना की दावत दी , यह जलसा इस्लाम के ख़िलाफ़ फैलाई जाने वाली सारी ग़लत-फ़हमियों को दूर करने का माध्यम है।

*एक मेहमान औरत Mrs. Ieva Kerzaite साहिबा कहती हैं:जलसा के दौरान ऐसा महसूस हुआ जैसे मैं जमाअत का ही हिस्सा हूँ। यह जलसा हमें बराबरी , मुहब्बत और दूसरों की ख़िदमत करने का सबक़ देता है जिसका अनुकरणी मुज़ाहरा इसी जलसा में देखा जा सकता है।

*एक मेहमान औरत Mrs. Ruta Lovickaite वर्णन करती हैं:अपने हुजम और एहमीयत के लिहाज़ से यह जलसा मेरी ज़िन्दगी का सबसे बड़ा प्रोग्राम है। मैं हैरान हूँ कि किस तरह काम करने वाले मुस्कुराते चेहरों के साथ सेक्योरिटी , दूसरी ज़िम्मेदारीयों और मदद के लिए प्रत्येक समय तैयार रहते हैं।

*Jamir Bckrak Nomnoum साहिब जो कि Telekom मैं काम करते हैं और सीरिया से उनका सम्बन्ध है। जर्मनी में आए तीन साल हुए हैं। कहते हैं:जलसा की तक़रीर सुनकर में बहुत प्रभावित हुआ हूँ और निज़ाम भी बहुत अच्छा था और भाईचारा बहुत पसंद आया।

*एक पति पत्नी बुलग़ारिया से आए थे Mrs. Irina Naydenov और Mr. Borislav Naydenov अपने विचारों का प्रकट करते हुए वर्णन करते हैं: प्रबन्ध को बहुत पसंद किया। पृष्ठई थी, पानी अच्छा था और इस बात से बहुत ख़ुश हुए कि नए सम्बन्ध बनाने का मौक़ा मिला। तक़ारीर को भी पसंद किया क्योंकि तर्क बहुत मज़बूत थे। हुज़ूर सारे धर्मों से इन्साफ़ करते हैं और जो वह कहते हैं वह सच है।

*आदरणीय Yousuf Salib साहिब जो कि लिथुआनिया से तशरीफ़ लाए थे वर्णन करते हैं: मैंने इस साल जलसा सालाना में पहली बार शिरकत की है और मुझे अहमिदयों में भाईचारा देखकर बहुत अच्छा लगा। अहमदी दोस्त बहुत ख़ुश अख़लाक़ हैं और मुझे यहां आकर बहुत अच्छा महसूस हुआ।

*जर्मनी से एक मेहमान आदरणीय Arber Brahimi साहिब कहते हैं:मैं हैरान रह गया। खाने का प्रबन्ध बहुत अच्छा था। अच्छी नसीहतें मिलीं कि हमें मुहाजरीन के साथ कैसा रवैय्या धारण करना चाहिए । सब लोग बहुत मेहमान नवाज़ हैं और अच्छे हैं। बहुत अच्छे तरीक़े से मुझे डील किया गया है। हमें इस्लाम के बारे में बहुत अच्छी और अमन देने वाली मालूमात मिलें जो कि उनसे बहुत विभिन्न थीं जो कि हमें पेश की जाती हैं।

*कोसोवो से एक मेहमान आदरणीय Shamolli Bajramसाहिब कहते हैं:मुझे सब कुछ बहुत अच्छा लगा। सब ठीक था और जो कहा सब सच था। प्रबन्ध ज़बरदस्त थे।

*आदरणीय डाक्टर डीटलीफ़ रोज़मन जर्मनी से वर्णन करते हैं: उनको जमाअत का परिचय एक अहमदी परिवार से हुआ। पहले तो वह इस्लाम से भयभीत थे, मगर जब उनके इस अहमदी परिवार से सम्पर्क मज़बूत हुए तो उन्होंने देखा कि उनमें उच्च किस्म के आचरण हैं, हँसमुख मिज़ाज हैं, ख़ुशखुलक़ी उनमें पाई जाती है तो उसने पूछा कि आप हैं कौन ? इस परिवार ने जवाब दिया कि हम अहमदी हैं। इस पर सवाल किया कि अहमदियत क्या चीज़ है। इस तरह से इस के सम्पर्क और अधिक अहमदी दोस्त से होने लगे और इस को मालूम हुआ कि दूसरे मुसलमान तो अमन और सलामती का नारा लगाते रहते हैं मगर जमाअत अहमिदया ही है जो इस पैग़ाम को व्यावहारिक रूप पहनाती है। महोदय फिर अपने बच्चों के साथ जलसा सालाना पर आए। हुज़ूर अक़्दस के नूर वाले मुबारक चेहरा से बहुत प्रभावित हुए कि इस में उनको वह सुकून , शान्ति और दिलजमई दिखाई दी और इसी तरह हुज़ूर अक़्दस का ठहर ठहर कर बात करना उनको बहुत पसंद आया। जलसा का प्रबन्ध बहुत अच्छा था और यहां का माहौल भी बहुत दोस्ताना था।

*डाक्टर डीटलीफ़ गीअर यंग जर्मनी से वर्णन करते हैं: यह अपने शहर की प्रोटैस्टैंट चर्च के मुंतज़िम आला हैं। उनको जलसा का माहौल बहुत पर सुकून मालूम हुआ। जमाअत अहमिदया दूसरे मुसलमानों से बहुत विभिन्न है। जैसा कि अमन की शिक्षा है। हुज़ूर अक़्दस के लजना के ख़िताब से बहुत प्रभावित हुए जिस में हुज़ूर अक़्दस ने औरतों की विभिन्न क़ुर्बानियों का ज़िक्र फ़रमाया। मगर वह कहते हैं कि यद्यपि कि हमें जर्मनी में अब इतनी अधिक समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ रहा। जलसा का प्रबन्ध बहुत अच्छा था। इस्लाम के बारे में जो नुमाइश लगाई गई थी वह बहुत तारीख़ी थी। इसी तरह उनको यह बात भी महसूस हुई कि जमाअत अब मीडीया में भी बहुत स्पष्ट है।

*आदरणीय Mammadou ba Cisse माली के शहरी हैं ,जर्मनी में रहते हैं वह वर्णन करते हैं कि उनकी बड़ी इच्छा है कि ऐसे जलसों में वह बार-बार शिरकत करें । लोग बहुत ख़ुश-मिज़ाज और ख़ुश आदत थे। जलसा का प्रबन्ध सामूहिक रूप से बहुत अच्छा था। जो ख़लीफ़ा वक़्त फ़रमाते हैं इन बातों से बिलकुल विभिन्न है जो मीडीया बताता है। नमाज़ के दौरान हुज़ूर अक़्दस की आवाज़ ने मेरे दिल को छू लिया और इतने ज़्यादा लोगों का नमाज़ पढ़ते वक़्त एक ऐसा अमन वाला माहौल क़ायम करना अतुलनीय है।

*आदरणीया Mrs. Trautzburg वर्णन करती हैं: जलसा सालाना के दिन मुझे आदरणीया अहमद साहिबा ने दावत दी। मैं बड़ी ख़ुशी से शामिल हुई और अपने दिल की गहराईयों से शुक्रिया अदा करना चाहती हूँ कि इतने खुले दिल और हंसमुख रूप से मेरा स्वागत किया गया। महोदया ने मुझे बहुत विस्तार के साथ सारी समस्याओं को समझाया और उनकी कोशिश रही कि मैं किसी तरह से भी अकेलापन महसूस ना करूँ। मैं बहुत प्रभावित हुई हूँ और इच्छा करती हूँ कि काश आपके ख़लीफ़ा की हिदायत पर अनुकरण किया जाए। अत: ये एक बहुत दिलचस्प

और पर मआरिफ़ वाला जलसा रहा।

*आदरणीय Gehrt Hartjenसाहिब जो कि Religions for Peace के सदर हैं वर्णन करते हैं कि जलसा सालाना एक निहायत प्रभावकारी और दिलचस्प event था। इस में बहुत कुछ सीखने का मौक़ा मिलता है और मैं यहां के प्रबन्ध व्यवस्था पर बहुत हैरान हूँ ।

*आदरणीय Karl Heinz Bongarz साहिब वर्णन करते हैं कि मेरे वहम तथा गुमान में भी नहीं था कि आपकी जमाअत इतनी बड़ी होगी। इस चीज़ ने मुझ पर बहुत असर किया। मुझे जलसा में शामिल होना बहुत अच्छा लगी। आपकी जमाअत बहुत अधिक मुनज़्ज़म है।

*एक पादरी Dariuz साहिब वर्णन करते हैं कि आपके ख़लीफ़ा की तक़रीर बहुत प्रभावकारी थी। मुझे जलसा में शामिल हो कर बहुत अच्छा लगा। मैं और मेरी पत्नी आपका धन्यवाद करते हैं कि आपने हमें जलसा में शामिल होना की दावत दी। मुझे यह बात बहुत अच्छी लगी कि आप के ख़लीफ़ा वर्तमान समय के विषयों पर गुफ़्तगु फ़रमाते हैं और आपने वर्तमान समय की समस्याओं के हल वर्णन फ़रमाए हैं।

*आदरणीय Khasib साहिब वर्णन करते हैं कि मैं जलसा सालाना जर्मनी कारलसरोए में शामिल हुआ हूं और जलसा सालाना मुझ पर सकारात्मक रूप में असर डालने वाला हुआ। आरम्भ से अन्त तक बहुत अच्छे प्रबन्ध थे। इस से पहले मुझे इस किस्म के प्रोग्राम में शामिल होना का मौक़ा नहीं मिला। जलसा सालाना का दोस्ताना माहौल मुझे सबसे अच्छा लगा। इस माहौल ने मुझ पर इतना असर किया कि मैंने शीघ्र अपने दोस्तों को इस का वर्णन किया। बहुत अधिक लज़ीज़ खाने और हर किस्म की देख-भाल पर आपका धन्यवाद करता हूँ । शुक्रिया शुक्रिया शुक्रिया। मैं अगले सालों में भी जलसा सालाना में शामिल होऊंगा और अगले साल अपने माता पिता को भी साथ लेकर आऊँगा।

*जर्मनी से आदरणीया Annette Sinn- Grundel पहली बार तशरीफ़ लाएं वह अपने विचारों को प्रकट करते हुए वर्णन करती हैं मेहमानों के साथ दोस्ताना रवैय्या देखकर बहुत प्रभावित हुई । हुज़ूर को अब तक टीवी स्क्रीन पर देखा था। आज सामने देखने का मौक़ा मिला तो बहुत ख़ुशी हुई। उन्हें औरतों के लिए अलग पर्दा में प्रबन्ध बहुत पसंद आए। उनका यह ख़्याल है कि इस तरह औरतें आज़ादी से अपने प्रोग्राम कर सकती हैं।

10 सितंबर 2018 ई(दिनांक सोमवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह 5 बजकर 50 मिनट पर तशरीफ़ लाकर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक और रिपोर्टस देखीं और हिदायतों से नवाज़ा और हुज़ूर अनवर विभिन्न दफ़्तरी उमूर के करने में व्यस्त रहे। आज प्रोग्राम के अनुसार विभिन्न देशों से आने वाले वफ़ूद की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ातें थीं।

इंडोनेशियन वफ़द की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ 10 बजकर 45 मिनट पर मस्जिद के मर्दाना हाल में तशरीफ़ लाए जहां इंडोनेशिया से आने वाले वफ़द की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात थी। इंडोनेशिया से इस साल जलसा सालाना जर्मनी के मौक़ा पर 95 लोगों परआधारित एक बड़ा वफ़द आया था जिस में मर्द और औरतों शामिल थीं। हुज़ूर अनवर ने पूछा यहां आपका बड़ा वफ़द आया है। यू.के जलसा की तुलना में बड़ा वफ़द है। जर्मनी वालों ने आसानी से वीज़ा दे दिया है। वफ़द के मेम्बरों ने बताया कि इस बार इंडोनेशियन अनुवाद का बहुत अच्छा प्रबन्ध था। महमूद वर्दी साहिब इंचार्ज इंडोनेशियन डैसक यू.के ने यहां आकर अनुवाद की ज़िम्मेदारी संभाली है। और यहां जर्मनी जलसा के अवसर पर पहली बार हुज़ूर अनवर के ख़ुत्बा जुमा और ख़िताबों का लाईव इंडोनेशियन अनुवाद हुआ है।

तासक मिलाया से आने वाले एक जमाअत के ओहदेदार ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में दुआ के लिए एक ईंट पेश की और बताया कि हम वहां की पुरानी मस्जिद में वृद्धि कर रहे हैं। तासक मिलाया वही जगह है जहां 1945 ई में दस अहमदी दोस्त शहीद किए गए थे। अब यहां बड़ी मस्जिद बनानी है जहां हज़ार के लगभग लोग नमाज़ अदा कर सकें। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने यह ईंट अपने दस्ते मुबारक में लेकर दुआ की और अलैसलिलाह बेकाफिन अब्दहो वाली अँगूठी उस ईंट के साथ लगाई ।

वफ़द के मेम्बरों ने हुज़ूर अनवर की सेवा में दरख़ास्त की कि हुज़ूर अनवर हमारे जलसा सालाना में शामिल हों। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जब आप इंटरनैशनल जलसा करेंगे तो मैं वहां आऊँगा। अभी आप अपने हालात की वजह से रीजनल स्तर पर जलसे करते हैं नेशनल स्तर पर जलसा नहीं होता।

सिस्टर ख़दीजा साहिबा ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में नैशनल मजलिस आमला और लजना इमाउल्लाह इंडोनेशिया की तरफ़ से सलाम पहुंचाया और सब के लिए दुआ की दरख़ास्त की। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया वा अलैकुम अस्सलाम अल्लाह तआला अपना फ़ज़ल फ़रमाए और अपनी हिफ़ाज़त में रखे।

एक इंडोनेशियन बच्ची ने जो इस वक़्त जर्मनी में यूनिवर्सिटी में शिक्षा प्राप्त कर रही है अपनी पढ़ाई के लिए दुआ की दरख़ास्त की इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया ख़ुदा तआला आपकी इच्छा पूरी फ़रमाए । बहुत सारी औरतों ने बारी बारी हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में अपने लिए अपनी परिवार और बच्चों के लिए दुआ की दरख़वास्त प्रस्तुत कीं और हुज़ूर अनवर से दुआएं हासिल कीं।

एक औरत ने निवेदन किया कि मेरे बच्चे वक़्फ़ नो हैं। मेरी एक बेटी यहां जर्मनी में पढ़ रही है। मेरे बेटे ने हाई स्कूल की शिक्षा के बाद मेडीसन में जाना है। मैं ख़ुद भी डाक्टर हूँ इन सब के लिए दुआ की दरख़ास्त करती हूँ। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़रमाए । बच्चों को कामयाब फ़रमाए।

एक बुज़ुर्ग दोस्त ने निवेदन किया कि मेरे 16 पोते पोतियां, नवासे इत्यादि हैं इस पर हुज़ूर ने फ़रमाया कि कब सबको इकट्ठे ला रहे हैं।

मुलाक़ात के आख़िर पर वफ़द के सारी मेम्बरों ने परिवार के साथ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीरें बनवाने की सआदत पाई। हर परिवार जब तस्वीर बनवाने के लिए आती तो जहां मर्द हुज़ूर अनवर से हाथ मिलाने का शरफ़ पाते वहां हुज़ूर अनवर के दस्ते मुबारक पर चुम्बन देते । कुछ औरतों और बच्चीयां अपने सिर झुकातीं हुज़ूर अनवर शफ़क़त के साथ अपना मुबारक हाथ उनके सिरों पर रखते और दुआओं से नवाज़ते। इंडोनेशियन वफ़द का हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाक़ात का यह प्रोग्राम ग्यारह बजकर पंद्रह मिनट तक जारी रहा।

जार्जियन वफ़द की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

इस के बाद मुल्क जॉर्जिया से आने वाले वफ़द ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात की सआदत पाई। जॉर्जिया से 38 लोगों पर आधारित वफ़द जलसा जर्मनी में शामिल हुआ। इस में दो पादरी साहिब , दो मुफ़्ती साहिब , शीया थे सुन्नी लीडर्ज़ और अन्य 30 ग़ैर जमाअत लोग शामिल थे। ये जॉर्जिया से पहला वफ़द था जो जलसा सालाना जर्मनी में शामिल हुआ। वफ़द के मेम्बरों ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में निवेदन किया कि हम यहां पर बहुत ख़ुश हैं। यहां हमारा पहला तजुर्बा है। हम पहली बार जलसा पर आए हैं। हमारा हर तरह से ख़्याल रखा गया है और हमारी मेहमान-नवाज़ी की गई है।

मुस्लिम कम्यूनिटी की नुमाइंदगी करने वाले एक जार्जियन दोस्त ने निवेदन किया कि हमें बहुत ख़ुशी है कि अहमिदया मुस्लिम कम्यूनिटी भी जॉर्जिया में आई है और वहां बाक़ायदा जमाअत ने अपना मिशन खोला है। हम जमाअत की तरफ़ अपना हाथ आगे बढ़ाते हैं। महोदय ने फ्रेम के अंदर अपने शहर की एक तस्वीर प्रस्तुत की और कहा कि यह एक सिंबल (symbol) है हमारे सम्बन्ध और मुहब्बत का आप इसे क़बूल करें। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया तस्वीर देने का शुक्रिया और जिन विचारों को आप ने प्रकट किया है इस का भी शुक्रिया।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया सारे मुसलमानों के लिए यह एक उसूल है कि सब आपस में मिलकर इन्सानियत की भलाई के लिए काम करें और समाज में अमन और भाईचारा , सौहार्द क़ायम करें। ये चीज़ें इस्लाम की शिक्षा की बुनियाद हैं कि अपने पैदा करने वाले रब को पहचानें और इस के हुक़ूक़ अदा करें और ख़ुदा की मख़लूक़ के हुक़ूक़ अदा करें। हर बंदा दूसरे बंदे के हुक़ूक़ अदा करे।

एक औरत ने निवेदन किया कि मैं चर्च की बिशप हूँ, में बहैसीयत बिशप आपकी जमाअत जर्मनी का दिल की गहराई से शुक्रिया अदा करती हूँ कि यहां हमारा स्वागत किया गया और हमारा हर तरह से ख़्याल रखा गया। एक मेहमान औरत ने निवेदन किया कि औरतों के लिए अलग प्रबन्ध था उनकी जलसा गाह अलग थी वहां तक़रीरें भी हुईं में इस से बहुत प्रभावित हुई हूँ। हुज़ूर अनवर ने अपने सम्बोधन में जो पैग़ाम दिया है वह सारे यूरोप के लिए बड़ा प्रमुख है यह हर जगह पहुंचाना चाहिए। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया हमारी कम्यूनिटी तो पहले ही अमन इन्साफ़ और भाईचारा का पैग़ाम हर जगह पहुंचा रही है। आपकी एप्रोच बेहतर है ,आपके

संसाधन बेहतर हैं , आप इस पैग़ाम को यूरोप में पहुंचाएं। नान मुस्लिम के रूप में आपके शब्द ज़्यादा असर करने वाले होंगे तो आप मेरी तरफ़ से स्पूक्स परसन हैं।

एक दोस्त ने निवेदन किया कि मैं ने हुज़ूर अनवर की तक़रीरें सुनी हैं , आपका पैग़ाम बहुत प्रभावकारी है और दुनिया के लिए ज़रूरी है। मैं बाक़ायदा mta सुनता हूँ। आज हुज़ूर को पहली बार सामने देखा है अब हम जमाअत अहमिदया के साथ जॉर्जिया में मिलकर काम करेंगे। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आपका शुक्रिया।

एक मेहमान ने निवेदन किया कि जलसा के प्रबन्ध ने हमें बहुत प्रभावित किया है। हुज़ूर अनवर की तक़रीरों से मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ। तक़रीरों ने मुझ पर बहुत असर डाला है। इस पर हुज़ूर ने फ़रमाया ख़ुदा तआला बरकत दे। आप यहां जलसा पर आए और यहां वक़्त गुज़ारा और यहां आकर आपने इस्लाम की असल तस्वीर देखी। जो इस्लाम हम प्रस्तुत करते हैं वह वही है जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें सिखाया। इस्लाम की असल और वास्तविक शिक्षाएं ही हम वर्णन करते हैं। अब आपके लिए यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि इस्लाम अमन , सलामती मुहब्बत भाईचारा और सौहार्द का मज़हब है। उग्रवाद और दहशतगर्दी का इस्लाम से कोई सम्बन्ध नहीं। हुज़ूर अनवर के पूछने पर शीया और सुन्नी मुस्लिम कम्यूनिटी के लोगों ने बताया कि जॉर्जिया में आबाद मुस्लिम कम्यूनिटी की संख्या आधा मिलियन के लगभग है और हम सब मिल-जुल कर रह रहे हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अब आप दोनों ने इस्लाम की असल और वास्तविक तस्वीर देख ली है और इस का अनुकरणीय नमूना और प्रदर्शन भी देख लिया है। इस ज़माना में जमाअत अहमिदया ही है जो इस्लाम की असल और वास्तविक शिक्षा पर अनुकरण कर रही है।

जॉर्जिया के वफ़द में शामिल एक मेहमान जो कारोबार के एतबार से इन्जीनियर हैं उन्होंने सवाल किया कि आपकी जमाअत जार्जिया में स्थापित हो गई है इस बारे में से आपकी जार्जियन क़ौम से किया आशाएं हैं? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :मज़हब दिल का मामला है इसी लिए क़ुरआन करीम में बड़ी वज़ाहत के साथ लिखा गया है कि धर्म में कोई जबर नहीं है इस लिए सबसे पहली बात तो यह है कि आप जब भी किसी मज़हब का कोई पैग़ाम सुनें तो यह कहना न शुरू कर दें कि ये सब झूठ और धोखा है बल्कि एक दूसरे की इज़्ज़त करें। इसी तरह आप अपने अंदर भाईचारा पैदा कर सकते हैं। यही सबसे बुनियादी चीज़ है जिसका इस्लाम हर इन्सान से मांग करता है और इसी से आप दुनिया में अमन का क़ियाम कर सकते हैं। आजकल अमन दुनिया की सबसे प्रमुख ज़रूरत है। इसलिए अगर आप अमन चाहते हैं तो सारे धर्मों को एक दूसरे के साथ मिलकर दोस्ताना माहौल में रहना होगा। और इन्हें बातों की में जार्जियन लोगों से आशा रखता हूँ।

इस वफ़द में शामिल एक ग़ैर अहमदी मस्जिद के इमाम Jambul Abduladze साहिब ने अपने प्रतिक्रियाएं वर्णन करते हुए कहा : मैं जॉर्जिया की एक मस्जिद का इमाम हूँ और मैं अहमिदया जमाअत की दावत पर जर्मनी आया हूँ। मैंने इस्लाम के बारे में बहुत सी नई चीज़ें सीखी हैं जो मैं पहले नहीं जानता था। हुज़ूर का एक वाक्य मुझे हमेशा याद रहेगा कि हमारा फ़र्ज़ बनता है कि हम इन्सानियत की मदद करें। इस्लाम सिर्फ और सिर्फ अमन का मज़हब है। यहां आकर हमें इस्लाम की वास्तविक शिक्षा मालूम हुई है।

एक मेहमान Lako साहिबा वर्णन करती हैं कि मैं पहली बार जलसा सालाना में आई हूँ और मुझे यह जलसा बहुत ही पसंद आया है यहां की हर एक चीज़ मुझे बहुत अच्छी लगी है। मैं आप सब का शुक्रिया अदा करना चाहती हूँ।

वफ़द की एक मैंबर औरत Irma Dimitradze साहिबा वर्णन करती हैं कि मैं आज औरतों के प्रोग्राम में शामिल हुई हूँ और मुझे हैरत थी कि औरतें सारे प्रोग्राम कैसे manage करेंगी। ये बहुत हैरान करने वाला था कि सैक्योरिटी चैक भी औरतें ख़ुद ही कर रही थीं। मुझे ये बहुत अच्छा लगा और मैं आपका शुक्रिया अदा करती हूँ।

एक और मेहमान Eteri Kotrikadze साहिबा वर्णन करती हैं कि मैं पहली बार जलसा पर आई हूँ और ख़लीफ़ा की तक़रीर से बहुत ही प्रभावित हुई हूँ । ख़लीफ़ा ने इस्लाम के वास्तविक पैग़ाम का ज़िक्र किया। मैं इस बात पर बहुत ख़ुश हूँ और मैं आप सबको सलाम कहती हूँ।

वफ़द में शामिल एक मेहमान औरत Rusudan Gotsiridze साहिबा कहती हैं कि मैंने आज सुबह औरतों का प्रोग्राम देखा और मुझे बहुत ही अच्छा लगा कि औरतों की शिक्षा तथा तर्बीयत का कितना ख़्याल रखा जाता है। सबसे अच्छी बात जो मैंने देखी वह थी कि ख़लीफ़ा अपने हाथों से शिक्षा ऐवार्डज़ दे रहे थे।

Jambul Abduladze साहिब वर्णन करते हैं कि मैं जॉर्जिया से हूँ और एक मुसलमान संगठन का चेयरमैन हूँ। इस जलसा में शामिल होना हमारे लिए बहुत बड़ा सम्मान था। मैंने यहां पर रूहानियत और भाईचारे को देखा है। मैं समझता हूँ कि यह बहुत अच्छा मौक़ा था कि हम यहां आए और लाभांवित हुए।

वफ़द में शामिल एक दोस्त मुहम्मद हुसैन अकबर साहिब अपनी प्रतिक्रियाएं को प्रकट करते हुए वर्णन करते हैं कि हम बचपन से सुन रहे हैं कि कोई महदी आएगा जो कोई तबदीली करेगा और हम इसी के इंतज़ार में रहे। अब पहली बार मैं सुन रहा हूँ कि वह महदी जिसके हम मुंतज़िर थे वह गुज़र भी गया है और अब उस के ख़लिफ़ा का सिलसिला जारी है। मैं अब जमाअत का लिट्रेचर का अध्ययन करूँगा और मुझे उम्मीद है कि मुझे इतमीनान हासिल होगा।

जॉर्जिया से बिशप मालख़ाज़ साहिब भी जलसा में शरीक हुए थे यह अपनी प्रतिक्रियाएं प्रकट करते हुए कहते हैं जमाअत अहमिदया ही वह जमाअत है जो सारे धर्मों को आपस में मिला सकती है। जमाअत अहमिदया ही है जो बग़ैर किसी बदला के अपनी सारी ताकत अमन तथा सुकून के लिए ख़र्च करती है। जमाअत का ख़लीफ़ा उस अमन तथा सुकून का एक मिसाली नमूना हैं। मैं पहले भी यूके जलसा पर आया था और इस वक़्त ख़लीफ़ा के अनुकरण में नमाज़ अदा की। मुझे बड़ी शिद्दत से यह इच्छा थी कि मैं ख़लीफ़ा से दुबारा मिलूं। यह इच्छा अब पूरी हो गई है और मैं बहुत ही ख़ुश हूँ कि मैं जलसा पर शामिल हो सका। जॉर्जिया के वफ़द की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से यह मुलाक़ात ग्यारह बजकर चालीस मिनट तक जारी रही। मुलाक़ात के आख़िर पर सारी मेम्बरों ने बारी बारी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया।

लिथुआनिया , लातोया , स्लोवेनिया, एस्टोनिया, कज़ाकिस्तान के वफ़द की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार लिथुआनिया , लातोया , स्लोवेनिया, एस्टोनिया, कज़ाकिस्तान से आने वाले वफ़ूद ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात की सआदत हासिल की। लिथुआनिया से पच्चास लोगों पर आधारित वफ़द आया था जिन में चालीस ग़ैर जमाअत दोस्त और दस अहमदी दोस्त थे। मलिक लातोया से 22 लोगों पर आधारित वफ़द ने जलसा सालाना जर्मनी में शिरकत की। जबकि स्लोवेनिया से छ: लोगों पर आधारित वफ़द शामिल हुआ। एस्टोनिया से पाँच लोगों पर आधारित वफ़द ने और मुल्क कज़ाकिस्तान से सात लोगों पर आधारित वफ़द ने जलसा में शिरकत की। इन पांचों देशों से आने वाले वफ़ूद की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से इज्तिमाई मुलाक़ात हुई। हुज़ूर अनवर ने वफ़द के मेम्बरों को सवाल करने की इजाज़त अता

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

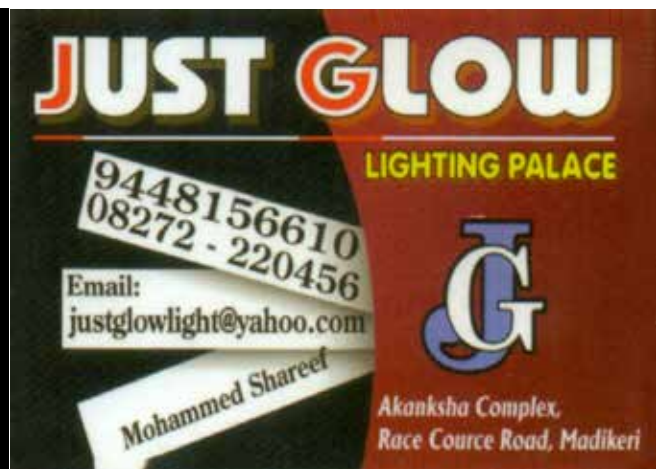

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

फ़रमाई। लिथोविया वफ़द में शामिल एक मेहमान जो काम के एतबार से लेखक हैं उन्होंने सवाल किया कि जमाअत अहमिदया इस वक़्त दुनिया में ऐसा क्या कर रही है जिससे दुनिया के लोगों में मौजूद फ़र्क़ को दूर किया जा सके?

इस के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : अहमिदया जमाअत का मिशन ही यह है कि बंदे को ख़ुदा के क़रीब लाना और उसे ख़ुदा की पहचान करवाना है और दूसरा यह कि इन्सान को इन्सानी इक़दार की पहचान करवाना। यही इस्लामी शिक्षा की बुनियाद है और इसी शिक्षा को जमाअत अहमिदया दुनिया में फैलाने की कोशिश कर रही है। यही वजह है कि दुनिया जमाअत अहमिदया के पैग़ाम को सुनती है और appreciate करती है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : अल्लाह तआला फरमाता है कि अगर अल्लाह तआला के और इस की मख़लूक़ के हुक़ूक़ अदा करोगे तो तुम अल्लाह की नज़र में बेहतर होगे और अल्लाह तुम से राज़ी होगा। क़ुरआन ने यह स्पष्ट कर दिया है कि अगर तुम बंदों के हुक़ूक़ अदा नहीं कर रहे तो बेशक तुम जितनी चाहे नमाज़ें पढ़ने वाले हो, तुम्हारी ये नमाज़ें तुम्हारे लिए हलाकत होंगी और ये नमाज़ें तुम्हारे मुँह पर मार दी जाएँगी। कुछ हालात में इन्सानी हुक़ूक़ इबादत से बढ़ जाते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : इन्ही चीज़ों के लिए हम कोशिश कर रहे हैं और आजकल की दुनिया के हालात के सम्मुख हम सारी दुनिया की इस्लाह एक दिन में नहीं कर सकते। हम कोशिश जारी रखेंगे और इस काम को आने वाली नस्लों तक जारी रखेंगे यहां तक कि सारी दुनिया उस चीज़ को realize कर ले।

लिथोवनैन वफ़द में शामिल एक दोस्त ने सवाल किया कि एक ईसाई होने के नाते एक ईसाई को मुसलमानों के मध्य कैसे रहना चाहिए?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : ईसाइयत भी अल्लाह तआला की तरफ़ से आई है , यहूदियत भी अल्लाह तआला की तरफ़ से आई है , इस्लाम भी अल्लाह तआला की तरफ़ से आया है। सारे धर्म अल्लाह तआला की तरफ़ से आए हैं। इसलिए पहली बात तो यह है कि हमें अपने ख़ुदा को पहचानना चाहिए और अपने मज़हब की बुनियादी शिक्षाओं को समझना और उन पर अनुकरण करना चाहिए न उन शिक्षाओं पर अनुकरण करना चाहिए जिन्हें धर्मों के कुछ उल्मा बिगाड़ देते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : क़ुरआन करीम में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि अहले किताब से कह दो कि تَعَالَوْا إِلَىٰ كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ अर्थात ऐसी बात पर इकट्ठे हो जाओ जो तुम्हारे और हमारे मध्य एक सामान है। और वह ख़ुदा तआला की ज़ात है। अत: उस ज़ात पर यक़ीन करते हुए और इस की हिदायतों पर अनुकरण करते हुए हम सब इकट्ठे मिलकर काम करें। अत: यही वह बुनियादी शिक्षा है जिसके अनुसार हम दुनिया में काम कर रहे हैं। और अल्लाह के फ़ज़ल से हमारे सारे धर्मों के साथ और दुनिया के हर शरीफ़ आदमी के साथ अच्छे सम्बन्ध हैं।

लिथोवानैन वफ़द में शामिल एक औरत ने सवाल किया कि हुज़ूर अनवर ने जो ग़ैर मुस्लिम देशों के विभिन्न दौरे किए हैं उनके बारे में हुज़ूर अनवर के क्या तास्सुर है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : मैं तो रह ही ग़ैर मुस्लिम मुल्क में रहा हूँ। मैं सीरिया या इराक़ या सऊदी अरब से तो नहीं आया। इस लिए यह जो ग़ैर मुस्लिम देश हैं, वहां अभी तक कम से कम मज़हब की कट्टरता मौजूद है और मेरा ख़्याल है कि जब तक यह मौजूद रहेगी, यह लोग अल्लाह तआला की नज़र में भी बेहतर रहेंगे क्योंकि यह हर मज़हब को खुल कर अपने अक़ीदों पर अनुकरण करने और उनकी तब्लीग़ करने की इजाज़त देते हैं। जिस बर्दाश्त का अल्लाह तआला ने मुसलमानों को पैदा करने का हुक्म दिया था और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस को प्रकट किया था उसी की इस वक़्त अक्सर मुसलमान देशों में कमी है। अत: असल चीज़ यही है कि जिन लोगों में यह बर्दाश्त रहेगी और जिन में इन्सानी इक़दार रहेंगी वही बेहतर हैं।

लतोया के वफ़द की एक औरत ने सवाल किया कि मर्द और औरत आपस में हाथ क्यों नहीं मिला सकते?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : हर मज़हब की अपनी शिक्षा होती है और इस्लामी शिक्षा के अनुसार ग़ैर मर्द और औरत एक दूसरे के साथ हाथ नहीं मिला सकते। और यह हुक्म इस लिए नहीं है कि औरत की हैसियत कम है बल्कि कुछ तहफ़्फ़ुज़ात होते हैं और औरत की इज़्ज़त स्थापित करने के लिए इस्लाम ने इस चीज़ से मना किया है। और यहूदी औरतों के लिए भी यही शिक्षा है कि हाथ नहीं मिलाना। ना मर्दों ने औरतों से और ना औरतों ने मर्दों से। अब अमरीका में हमारी मस्जिद के क़रीब ही यहूदीयों का एक सीनागाग भी है वहां यहूदियों ने एक फंक्शन किया और वहां के रुब्बाई ने खुल कर ऐलान किया कि मुझ से अगर कोई औरत हाथ मिलाना चाहेगी तो मैं हाथ नहीं मिलाऊंगा क्योंकि मेरा मज़हब इस बात की इजाज़त नहीं देता। लेकिन इस के ख़िलाफ़ कोई नहीं बात करता क्योंकि यहूदियों के ख़िलाफ़ बोलने से क़ानूनी जुर्म लग जाते हैं। एक बार मुझे ख़ुद यहूदी औरत मिली और इस ने मुझे बताया कि हमारे मज़हब में भी मर्द से सलाम करना अर्थात हाथ मिलाना जायज़ नहीं है। इस लिए सिर्फ हाथ मिलाने के मुद्दे को इतना उठाने की क्या ज़रूरत है? और भी तो कई खूबियां हैं, उनको क्यों ना देखा जाए? जहां तक औरत की इज़्ज़त का सवाल है या किसी ऐसी औरत का सवाल है तो इस बारे में से में अपने बारे में या अपनी जमाअत के बारे में कहता हूँ कि सबसे पहले हम ही ऐसी औरत की मदद करेंगे चाहे हमें इस को इस जगह से उठाकर ही क्यों ना ले जाना पड़े। और यही औरत की असल इज़्ज़त और सम्मान है जो करनी चाहिए ना कि सिर्फ हाथ मिलाने से ही औरत की इज़्ज़त क़ायम होती है। इस बात को अब दुनिया भी realise कर रही है। जो हालीवुड में घटना हुई है इस के बाद मर्दों पर कितने इल्ज़ाम लगना शुरू हो गए हैं? यहां जर्मनी में बर्लिन में औरतों ने अपना अलग दफ़्तर वग़ैरा बनाया है और वह कहती हैं कि मर्द ग़लत किस्म की हरकतें करते हैं इस लिए हमने अपनी अलग संस्था बनाई है। इसलिए इस्लाम ने जो शिक्षाएं दी हैं वे हर बुराई के छोटी से छोटी संभावना से भी बचने के लिए दी हैं। इसलिए हम तो ये सब औरत की इज़्ज़त क़ायम करने के लिए करते हैं ना कि इस की इज़्ज़त कम करने के लिए।

लिथुआनिया से आने वाले वफ़द की एक मैंबर Leva Kerzaiteने अपने प्रतिक्रियाएं को प्रकट करते हुए कहा: जलसा के दौरान ऐसा महसूस हुआ जैसे में जमाअत का ही हिस्सा हूँ। यह जलसा हमें बराबरी , मुहब्बत और दूसरों की ख़िदमत करने का सबक़ देता है जिस का अनुकरणीय मुज़ाहरा इसी जलसा में देखा जा सकता है।

लिथुआनिया से सम्बन्ध रखने वाले Jaronimas Laucius साहिब कहते हैं मैं एक लेखक हूँ और यहां इस्लाम के बारे में सीखने आया हूँ। ख़ुदा की तौहीद का दर्स जिस अंदाज़ में ख़लीफ़ा ने दिया वह बहुत प्रभावित करने वाला है। ख़लीफ़ा ने फ़रमाया कि सिर्फ इबादत ही ना की जाए बल्कि ख़ुदा को ख़ुश करना मक़सूद होना चाहिए, इस बात ने मेरा दिल जीत लिया। मैं वापस जाकर जमाअत के बारे में अख़बारों में कालम भी लिखूँगा और अपने मैगज़ीन की एक पूरी संख्या सिर्फ़ जमाअत के बारे में प्रकाशित करूँगा। मुझे इस बात का अंदाज़ा है कि ऐसा करने से मुझे विरोध का सामना भी हो सकता है लेकिन मैं हक़ का साथ देना चाहता हूँ । मेरा दिल यहां आकर निहायत ख़ुश और सन्तुष्ट हुआ है मैं ख़लीफ़ा साहिब के लिए और जमाअत के लिए बहुत नेक तमन्नाओं को प्रकट करता हूँ।

लिथुआनिया के Tomas Cepaitis साहिब कहते हैं कि इस जलसा के माध्यम से में पहली बार वास्तविक इस्लाम से वाक़िफ़ हुआ। यद्यपि मैं हमेशा से ही इस्लाम के पेशवाओं का सम्मान करता आया हूँ और यूरोप में मुसलमानों के साथ जो सुलूक किया जाता है, इस को देखकर परेशान रहता था। इस जलसा के माध्यम से मैं एक नई दुनिया से परिचय हुआ हूँ जिसमें दुनिया के मौजूदा समस्या का हल मौजूद है। मुझे लगता है कि मुझे अभी इस्लाम से बहुत कुछ सीखना है। मैं आपका बहुत शुक्रगुज़ार हूँ कि आपने मुझे वास्तविक इस्लाम से परिचय करवाया। ख़लीफ़ा साहिब से मुलाक़ात में उनकी सादगी और हुस्न कलाम से बहुत आनन्दित हुआ।

लिथुआनिया के Arturas Mirkevicसाहिब कहते हैं: इस जलसा में इस्लाम को जानने के लिए बेहतरीन अवसर उपलब्ध किए गए हैं। इस्लाम के बारे में अध्ययन के लिए बहुत किताबें भी उपलब्ध हैं। मैं कुछ किताबें अपने साथ ले जाना चाहता हूँ जिनको पढ़ कर में इस्लाम के बारे में अपने ज्ञान को और अधिक बढ़ाने की कोशिश करूँगा।

लिथुआनिया से Indre Jasaite साहिबा कहती हैं इस जलसा में विभिन्न धर्मों से सम्बन्ध रखने वाले लोगों से मुलाक़ात की और मुझे एहसास हुआ कि विभिन्न धर्मों से सम्बन्ध रखने के बावजूद हम सब मुहब्बत और इन्सानियत के भावना से जुड़े हैं। यह इस जलसा का सबसे बड़ा तोहफ़ा है जो में अपने साथ लेकर

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 4 Thursday 18 April 2019 Issue No. 16

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

जा रही हूँ।

एक मेहमान Rimvydas Markevicius कहते हैं ख़लीफ़ा साहिब के दुआ करने और नमाज़ पढ़ाने का अंदाज़ बहुत प्रभावित करने वाला है। उनकी आवाज़ में नर्मी है और उनकी आवाज़ में ख़ुदा के लिए बहुत अधिक मुहब्बत मौजूद है जो सुनने वाले को दिली सुकून प्रदान करती है। मैं ग़ैर मुस्लिम हूँ और मस्जिद जाने से बहुत घबराता था लेकिन यहां आकर मालूम हुआ कि हर कोई बिना अन्तर मज़हब के आपके साथ नमाज़ अदा कर सकता है। अब मैं लंदन जा रहा हूँ और वहां भी अहमदियों के साथ नमाज़ अदा करने आपकी मस्जिद जाया करूँगा।

लिथुआनिया से Monika Gaidamaviciute साहिबा वर्णन करती हैं कि जब एक पाकिस्तानी दोस्त ने जलसे की दावत दी तो पहले तो मैं बहुत घबराई क्योंकि बहुत से लोग मुसलमानों को उग्रवादी समझते हैं लेकिन मुझे लगता था कि यह जलसा मेरे लिए विशेष साबित होगा। अब मैं यहां मौजूद हूँ मेरे हर तरफ़ मुसलमान हैं जो मुझे मुहब्बत इज़्ज़त और सम्मान से मिल रहे हैं। अहमदी मुसलमानों का दूसरों के लिए सम्मान खासतौर पर औरतों का सम्मान बहुत अधिक प्रभावित करने वाला है।

लिथुआनिया के वफ़द में शामिल Dominykas Raudonius साहिब वर्णन करते हैं कि यह जलसा इस्लाम की अमन पसंदी और मुहब्बत की अक्कासी करता है। मेरे ख़्याल में ऐसे जलसे ज़्यादा होने चाहिए।

लिथुआनिया के वफ़द में शामिल Aleksandras Sarapinas साहिब वर्णन करते हैं कि मुझे इस जलसा में बहुत मज़ा आया । आपके ख़लीफ़ा साहिब की तक़रीरों का हर शब्द स्पष्ट , आसानी से समझ आने वाला और दिल पर असर करने वाला है। वह मुसलमानों और सारी दुनिया को मुहब्बत का दर्स देते हैं। मैं उनकी सेहत तथा सलामती के लिए बहुत दुआ करता हूँ। ख़ुदा उन्हें अपने काम इसी तरह करते रहने की तौफ़ीक़ देता रहे। आमीन। मेरी बेटी और इस का शौहर अहमदी हैं मेरी इच्छा है कि ख़लीफ़ा साहिब उन के लिए दुआ करें।

लिथुआनिया से Danguole Sarapiniene साहिबा वर्णन करती हैं कि अहमदी मुसलमान दूसरों की इज़्ज़त और मुहब्बत करने वाले लोग हैं। अहमदी अपने मेहमानों की विशेष ख़िदमत करते हैं और बच्चों को बड़ों का अदब करना सिखाते हैं और आप बहुत ईमानदार लोग हैं। ख़लीफ़ा साहिब और दूसरे वक्ताओं की तक़रीरों से इस्लाम के बारे में बहुत कुछ सीखने को मिला।

लिथुआनिया से सम्बन्ध रखने वाली Ruta Lovickaite साहिबा वर्णन करती हैं कि अपने हुजम और एहमीयत के लिहाज़ से यह जलसा मेरी ज़िन्दगी का सबसे बड़ा प्रोग्राम है। मैं हैरान हूँ कि किस तरह काम करने वाले मुस्कुराते चेहरों के साथ सिक्योरिटी , दूसरी ज़िम्मेदारियों और मदद के लिए प्रत्येक क्षण तैयार रहते हैं।

एक मेहमान ने अपने प्रतिक्रियाएं वर्णन करते हुए बताया कि इस जलसा में शामिल होना से इस्लाम के बारे में सब ख़ौफ़ और ग़लत-फ़हमियाँ दूर हो गई हैं। दरअसल आप वे लोग हैं जो अमन लाने में प्रमुख किरदार अदा कर रहे हैं। मैं बहुत प्रभावित हूँ कि कैसे इतनी बड़ी संख्या में लोग गर्म-जोशी और ख़ुशखुलक़ी का मुज़ाहरा करते है। यह जलसा प्रबन्ध और ख़िदमते ख़लक़ की अज़ीम मिसाल है।

लिथुआनिया के Valdon Idrizi साहिब वर्णन करते हैं कि पहली बार जमाअत अहमदिया के जलसा सालाना में शामिल हो रहा हूं। ख़लीफ़ा ने बड़े विस्तार से और बहुत अधिक आसान शब्दों में और मुहब्बत से अख़लाक़ के बारे में विभिन्न पहलूओं को उजागर किया है जो कि किसी भी समाज के लिए बहुत ही उम्दा लाहे अमल है।

लिथुआनिया से Thomas साहिब और उनके दोस्त पहली बार जलसा में शामिल हुए। ये अपने प्रतिक्रियाओं को प्रकट करते हुए कहते हैं: इतने बड़े इज्तिमा को देख कर बहुत प्रभावित हुआ हूँ। अनुवाद का स्तर बहुत अच्छा था और हुज़ूर अनवर के ख़िताबों को सुनकर बहुत आन्नद मिला क्योंकि ख़लीफ़ा की बातों की मिसाल नहीं मिलती। और यह शिक्षा इस शिक्षा के बिलकुल मुख़ालिफ़ है जो मीडिया में आती हैं। जलसा के सारे काम करने वाले भी बहुत अच्छी तरह पेश आए।

पृष्ठ 2 का शेष

उस ख़ुदा पर एतराज़ है जिसने ये शक्तियां हम में पैदा कीं। अत: ऐसी शिक्षाएं जो इंजील में हैं और जिनसे शक्तियों का नष्ट होना अनिवार्य होता है ज़लालत(गुमराही) तक पहुंचाती हैं। अल्लाह तआला तो इस की बारबारी का आदेश देता है नष्ट करना पसंद नहीं करता। जैसे फ़रमाया: اِنَّ اللّٰہَ یَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَ الْاِحْسَانِ (अलनहल:91)अदल एक ऐसी चीज़ है जिससे सबको फ़ायदा उठाना चाहिए। हज़रत मसीह की यह शिक्षा देना कि अगर तू बुरी आँख से देखे तो आँख निकाल डाल। इस में भी शक्तियों का नष्ट करना है क्योंकि ऐसी शिक्षा ना दी कि तो ग़ैर मुहर्रम औरत को हरगिज़ ना देख। मगर इस के ख़िलाफ़ उसके इजाज़त दी कि देख तो ज़रूर लेकिन ज़ना(व्यभिचार) की आँख से ना देख। देखने से तो मना है ही नहीं। देखेगा तो ज़रूर ,बाद देखने के देखना चाहिए कि उसके क़ुवा पर क्या असर होगा। क्यों ना क़ुरआन शरीफ़ की तरह आँख को ठोकर वाली चीज़ ही के देखने से रोका और आँख जैसी मुफ़ीद और क़ीमती चीज़ को नष्ट कर देने का अफ़सोस लगाया।

(मलफ़ूज़ात , जिल्द अव्वल, सफ़ा 19 से 21)

☆ ☆ ☆
☆ ☆

लिथुआनिया से Daila Umbrasiene साहिबा वर्णन करती हैं कि आपकी जमाअत की रिवायतों को क़रीब से देखने का मौक़ा मिला। आपके ख़लीफ़ा से मुलाक़ात ने बहुत गहरा असर छोड़ा है। मैं सब के लिए नेक तमन्नाओं को प्रकट कर रही हूँ।

लिथुआनिया से एक छात्र Aurelija Einoryte साहिबा वर्णन करती हैं कि मैं इस जलसा सालाना पर शिरकत की दावत पर बहुत शुक्रगुज़ार हूँ। जलसा का माहौल बहुत मुहब्बत वाला और दोस्ताना है। एक लंबे अरसा से में ज़िन्दगी के मक़सद के बारे में सोच रही थी। इस जलसा में शिरकत के बाद मुझे मालूम हुआ कि ज़िन्दगी का मक़सद हम-ख़याल लोगों से मिलकर दूसरों की ख़िदमत करना है।

एक छात्र Eimis Vengrauskas साहिब ने अपने प्रतिक्रियाओं को प्रकट करते हुए कहा कि इस जलसा में शामिल हो के मैं कह सकता हूँ कि जलसा दरअसल इस्लाम की असल तस्वीर देखने का मौक़ा है जो कि मीडीया दिखाने में असफल है। मेरे लिए सबसे प्रभावित करने वाली बात लोगोंका आपस का सम्बन्ध और मुहब्बत और उनके हर समय मुस्कुराते चेहरे हैं। आपके ख़लीफ़ा की शख़्सियत बहुत अधिक प्रभावित करने वाली है। वह साक्षात मुहब्बत हैं और उनको देखकर महसूस होता है कि मुहब्बत को जिस्म की शक्ल में देख रहा हूँ।

एक छात्र Saufe Bulavarte साहिबा वर्णन करती हैं :मेरे लिए जलसा में शामिल होना और ख़लीफ़ा से मिलने का दूसरा मौक़ा है। यह जलसा मेरे पहले जलसा से बेहतर है क्योंकि इस बार मेरे पास इस्लाम का इल्म पहले से ज़्यादा है। हुज़ूर की कुछ तक़रीरों का लिथोवानैन ज़बान में अनुवाद करने के बाद में यह कह सकती हूँ कि वह एक हिदायत की रोशनी हैं जो जितना चाहे उस नूर से फ़ायदा उठा सकता है।

एक छात्र Ausra Umbrasaite साहिबा वर्णन करती हैं कि मैं पहली बार जलसा सालाना जर्मनी में शामिल हुई हूँ और मेंने यहां बहुत कुछ सीखा है। वर्तमान समय में इस तरह के इज्तिमों की बहुत एहमीयत है क्योंकि आम तौर पर लोगों के दिलों में इस्लाम के बारे में बहुत सी ग़लत-फ़हमियाँ मौजूद है। जमाअत अहमदिया का यह हुस्न है कि दूसरे मज़हब के मानने वालों को भी शिरकत की दावत देती है। इस्लाम की वास्तविक शिक्षा पर अनुकरण होता देख कर इस्लाम के बारे में अधिक मालूमात हासिल करने का भी हौसला पैदा हुआ है इस तरह मुसलमानों और ग़ैर मुस्लिम लोगों की दूरियाँ ख़त्म हो सकती हैं। मेरे लिए ये बहुत बड़ा सम्मान है कि मुझे जलसा सालाना में बतौर मेहमान शामिल होने की तौफ़ीक़ मिली ।

(शेष.....................)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad